अहिंसा, आगम और विज्ञान से आलोकित श्रेष्ठतम पत्रिका

भाव विज्ञान

BHAV VIGYAN

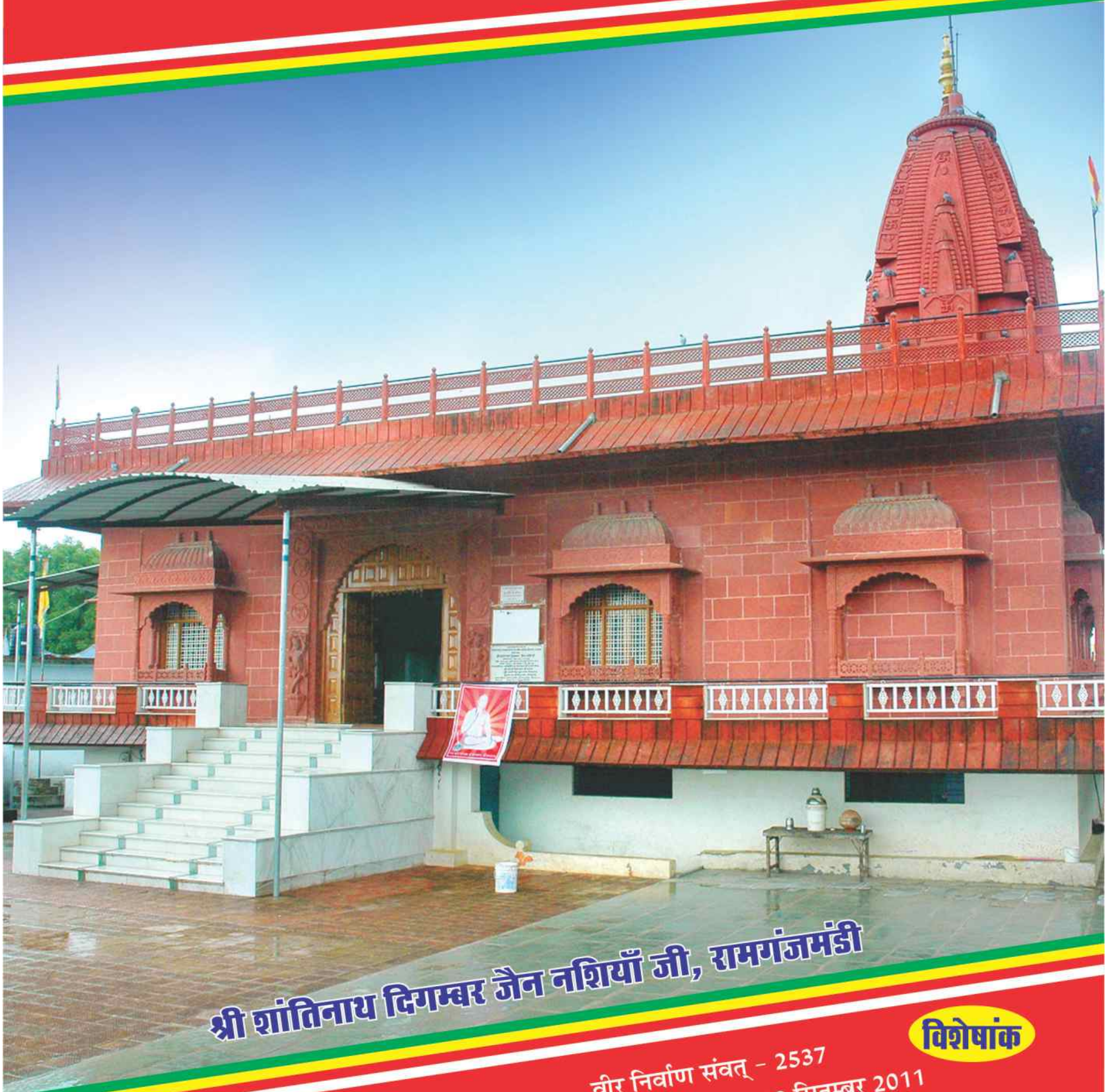

श्री शांतिनाथ दिगम्बर जैन नशियाँ जी, रामगंजमंडी

विशेषांक

वीर निर्वाण संवत् - 2537
अश्विन शुक्ल पक्ष वि.सं. 2068 सितम्बर 2011

वर्ष : पाँच   अंक : सत्रह   मूल्य : 10/-

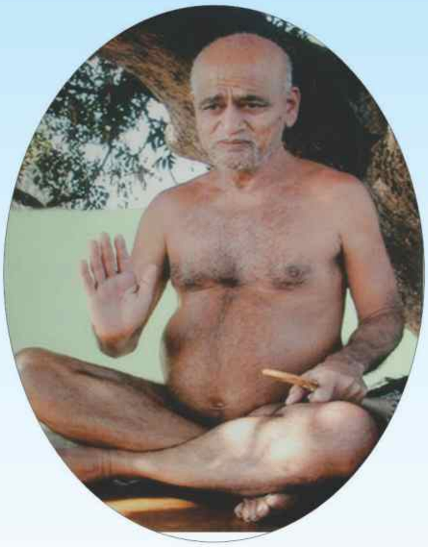

मूकमाटी

अबला बालाएं सब
तरला तारायें अब
छाया की भाँति
अपने पतिदेव
चन्द्रमा के पीछे-पीछे हो
छुपी जा रहीं
कहीं..... सुदूर....दिगन्त में
दिवाकर उन्हें
देख न ले, इस आशंका से।
मन्द-मन्द
सुगन्ध पवन
बह रहा है;

बहना ही जीवन है
बहता बहता
कह रहा है :
लो!
यह सन्धिकाल है ना!
महक उठी सुगन्धि है
ओर-छोर तक, चारों ओर।
मेरे लिए
इससे बढ़ कर श्रेयसी
कौन सी हो सकती है
सन्धि वह !

क्रमशः.....

आगामी प्रमुख पर्व एवं तिथियाँ

16 अक्टूबर	: रोहिणी व्रत	3 नवम्बर	: अष्टान्हिका व्रत प्रारंभ
25 अक्टूबर	: धनतेरस, मंगल त्रयोदशी व्रत	10 नवम्बर	: अष्टान्हिका व्रत पूर्ण
26 अक्टूबर	: दीपावली, भगवान महावीर निर्वाण गौतम स्वामी केवलज्ञान दिवस, चातुर्मास निष्ठापन, वर्षायोग पूर्ण	13 नवम्बर	: रोहिणी व्रत
		10 दिसम्बर	: रोहिणी व्रत

भगवान महावीर आचरण संस्था समिति

रजि.नं.: 01/01/01/17654/07

कार्यालय : एम-8/4 गीतांजली काम्प्लैक्स, कोटरा सुल्तानाबाद, भोपाल फोन : 0755-2673820

सम्पर्क सूत्र :

महामंत्री	संयुक्त सचिव	कोषाध्यक्ष	उपाध्यक्ष	अध्यक्ष
डॉ. अजित जैन	अरविन्द जैन, पथरिया	इंजी. महेन्द्र जैन	राजेश जैन 'रज्जन'	डॉ सुधीर जैन
94256 01161	दमोह		दमोह	9425011357

सदस्य -पवन जैन, श्रीमती संगीता जैन

संरक्षक : श्रीमती शीलरानी नायक, पनागर, श्री सुनील कुमार जैन, श्री महावीर प्रसाद जैन, सतना, श्री राजेन्द्र जैन कल्लन, दमोह, **विशेष सदस्य : दमोह :** श्री मनोज जैन दालमिल, श्री महेश जैन दिगम्बर, श्री संजीव जैन शाकाहारी, श्री तरुण सर्राफ, श्री पदम लहरी **सदस्य : जयपुर :** श्री शांतिलाल वागड़िया, **भोपाल :** श्री अविनाश जैन, श्री अरविंद जैन, श्री अनेकांत जैन।

शुभाशीष

संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागरजी
के धर्म प्रभावक परम शिष्य परम पूज्य
मुनिश्री १०८ आर्जवसागर जी महाराज ।

● *परामर्शदाता* ●
डॉ. प्रोफेसर एल.सी. जैन
जबलपुर, मोबा.: 9425386179
पंडित मूलचंद लुहाड़िया
किशनगढ़ (राजस्थान) मोबा.: 9352088800

● *सम्पादक* ●
श्रीपाल जैन 'दिवा', भोपाल
फोन: 4221458, 9893930333, 9977557313

● *प्रबंध सम्पादक* ●
डॉ. सुधीर जैन, प्राध्यापक
85, डी.के. काटेज, ई-8 एक्सटेंशन, अरेरा कालोनी,
भोपाल मो. 9425011357

● *सम्पादक मंडल* ●
डॉ. सी. देवकुमार, प्रमुख वैज्ञानिक, नई दिल्ली
पं. जय कुमार 'निशांत', टीकमगढ़ (म.प्र.)
डॉ. अजित कुमार जैन, भोपाल (म.प्र.)
डॉ. संजय जैन, पथरिया, दमोह (म.प्र.)
डॉ. श्रीमती अल्पना जैन (मोदी), ग्वालियर (म.प्र.)
इंजी. महेन्द्र कुमार जैन, भोपाल (म.प्र.)
श्री सुनील वेजीटेरियन, दमोह (म.प्र.)

● *कविता संकलन* ●
पं. लालचंद जैन 'राकेश', भोपाल

● *प्रकाशक* ●
श्रीमती सुषमा जैन धर्मपत्नी डॉ. अजित जैन
MIG-8/4, गीतांजली काम्प्लैक्स, कोटरा, भोपाल
फोन : 0755-2673820, 9425601161
email : bhav.vigyan@yahoo.co.in

● *आजीवन सदस्यता शुल्क* ●

शिरोमणी संरक्षक	:	51,000
पुण्यार्जक विशेषांक संरक्षक	:	24,500
परम संरक्षक	:	21,000
पुण्यार्जक संरक्षक	:	18,000
सम्मानीय संरक्षक	:	11,000
संरक्षक	:	5,100
विशेष सदस्य	:	3100
आजीवन सदस्य	:	1100

कृपया सदस्यता शुल्क प्रकाशक के एवं रचनाएँ प्रबंध सम्पादक के पते पर भेजें।

रजिस्ट्रेशन क्रं. **MPHIN/2007/27127**

त्रैमासिक
भाव विज्ञान
(BHAV VIGYAN)

वर्ष-पाँच
अंक-सत्रह

पल्लव दर्शिका

विषय वस्तु एवं लेखक — **पृष्ठ**

1. दिगम्बर जैन साधु — 2
''सम्पादकीय'' श्रीपाल जैन 'दिवा'

2. क्रियात्मक ध्यान में विवेक व सावधानी — 4
मुनि आर्जवसागर

3. जैन न्यायवादियों या न्यायविदों की गणितीय न्याय में पहुँच — 7
प्रो. एल.सी. जैन

4. सम्यक् ध्यान शतक — 11
मुनि आर्जवसागर

5. गुरु महाराज की पूजन — 12
हनुमान सिंह गुर्जर

6. गणितसार संग्रह — 16

7. मौन : ध्यान में एक आवश्यक — 19
डॉ. संजय कुमार जैन

8. जैन तीर्थंकर और उनके लांछन — 21
डॉ. श्रीमती अल्पना जैन

9. सागर में समर्पण व अमरता का वरण — 24
मुनि आर्जवसागर

10. समाचार — 26

15. प्रश्नोत्तरी — 33

लेखक एवं विचारों से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।
भाव विज्ञान से संबंधित समस्त निर्णयों/न्यायों के लिए न्याय क्षेत्र भोपाल ही मान्य होगा।

सम्पादकीय

दिगम्बर जैन साधु

-श्रीपाल जैन 'दिवा'

जिस प्रकार श्रमणबेलगोला में स्थित भगवान बाहुबली स्वामी की मूर्ति भारत के सात आश्चर्यों में प्रथम आश्चर्य माना गया है ऐसे ही विश्वजन समुदाय में व जीव समुदाय में अनन्त आश्चर्यों में प्रथम आश्चर्य है तो वह है दिगम्बर जैन साधु। जो आचरण के धनी होते हैं उनके आचार में अहिंसा होती है। विचार में अनेकान्त का विवेक होता है, वाणी में स्याद्वाद का सद्भाव होता है अपरिग्रह की मूर्ति होते हैं वे तप के अंगार होते हैं तो संयम के सूर्य होते हैं बिना बोले जो धर्म-प्रभावना का आधार होते हैं। जो संसार में रहते-संसार में नहीं रहते। जो चलते में ठहरे रहते और ठहरे में चलते रहते हैं जिनका बिछोना धरती हो और आकाश ओढ़ना हो। जिनके तन पर तार नहीं हो, हवा जिनके तन को चूम-चूम कर सहनशील बनाती है सूर्य अपनी किरणों से जिनके संघनन को मजबूत बनाता रहता है, धूप स्नान करवाता है। जो शीत को अपने तप के ताप से जीतते हैं, गर्मी को समता भाव से सहते हैं जो एक दिन में एक बार विधि पूर्वक आहार लेते हैं। जो अन्तराय का पालन करते हैं। अन्तराय आने पर आहार जल का तुरंत त्याग कर देते हैं। जो परमेष्ठी के अंग हैं जो सदैव पूजनीय हैं।

क्रोध जिनके निकट आने से डरता है, क्षमा हर पल जिनके साथ रहती है। जिनके हृदय में मार्दव कूट-कूट कर भरा है तो मृदुता निर्झर की तरह झरती रहती है। कठोरता तो ढूँढे नहीं मिलती है। जिनके हृदय में सदा आर्जव का ध्वज फहरा रहा हो वहाँ से वक्रता तो दुम दबाकर भाग खड़ी हुई है जैसे गर्दभ के सिर से सींग। सरलता डेरा डाले पड़ी है जिनके हृदयागार में। वहाँ कुटिलता का क्या काम? जिनके मन-वचन-काय में एकरूपता का सद्भाव रहता है। मायाचार तो हजार हाथ दूर ही जिनसे रहता है। छल-कपट भी उनसे दूर भागा-भागा फिरता रहता है।

जो मान को तो नमा-नमा कर उसका मर्दन करते रहते हैं। उनका नगन तन मदों का मर्दन ऐसा करता है कि वे फिर उनके पास फटकने का दुस्साहस ही नहीं करते। मानी मन किस पर मद करे जिन्होंने अपने पास कुछ रखा ही नहीं है। यदि कुछ रखा है तो सदाचरण की सम्पत्ति है, ज्ञान की धरोहर है, तप का ताप है, जो मान-मदों का दहन ही करता रहता है। संयम की साधना है जो मानी मन पर सवारी करती रहती है। जिनके पास चारित्र की चर्या है जो चर्या के अहं को भू लुंठित किया करती है। जिनके पास मौन का अस्त्र है तो अहिंसा का शस्त्र है जो उनके सबल आध्यात्मिक अंग के रक्षक हैं। और धर्म प्रभावना के

प्रबल प्रभावक साधन हैं जो पथ के ईर्ष्या, दुर्भावना-भरी बाधाओं को अपनी मृदुता व सरलता से पराजित करते रहते हैं। जिनके पंच महाव्रत परमाणु अस्त्रों से भी अधिक शक्तिशाली हैं जो हृदय परिवर्तन कर हिंसक को अहिंसक में बदलने की अपार शक्ति रखते हैं। जिनकी चर्या में अपरिग्रह महाव्रत की महाशक्ति है। जो लोभ की लीला का सफाया कर देती है। लोभ को पाप का बाप कहा गया है। उसका प्रताप मनुष्य को कर्म-कलंकी बना देता है परन्तु उनके सान्निध्य सत्संग से उसकी कालिख भी उज्ज्वलता को प्राप्त करने लगती है। उनके आचरण के प्रभाव से समता का प्रकाश फैलने लगता है। समता के सागर में सद्भावों की लहरें उठने लगती हैं। समाज में धर्म प्रभावना का प्रसार होने लगता है। ऐसे दिगम्बर जैन साधु जिनके आचार-सदाचरण तप-साधना-संयम के पुण्य प्रताप से परिवर्तन होने लगते हैं। प्रातः स्मरणीय आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के दर्शन सत्संग में वर्तमान में भी सारे परिवर्तन देखने में आते हैं।

उनके परम विद्वान कवि शिष्यों में भी उन्होंने इस आध्यात्म शक्ति का संचार किया है। वे सब भी अपने शुद्ध आचरण और चर्या से समाज को सद्पथ की राह लगा रहे हैं और दिगम्बर साधु भी महान साधना-आराधना में रत हैं। वे सब भी धन्य हैं। उन सभी ऐसे दिगम्बर साधु को शत-शत बार नमन-नमोस्तु।

शरीर के साथ आत्मा का भी उपचार करना होगा

अपने शरीर को स्वस्थ रखने व रोग का निदान कराने की तो अक्सर आदमी को चिन्ता रहती है मगर वह अपनी आत्मा के बारे में लापरवाह हो गया। तभी तो संसार में पाप प्रवृत्तियां पनप रही हैं। आदमी को आदमी से ही खतरा पैदा हो रहा है। इसलिए शरीर के साथ आत्मा का भी उपचार कराना बहुत जरूरी है। तभी सुख-शांति से जीवन का निर्वहन कर पाओगें। जिस तरह रोगी को उपचार कराने के लिए डॉक्टर या वैद्य के पास जाना पड़ता है, इसी तरह अपनी आत्मा पर चिपके हुए भव-भव के अशुभ कर्मों से छुटकारा पाने के लिए संतों के पास जाना होगा। जो स्वयं कर्मों की निर्जरा के लिए कड़ी साधना कर रहे हैं, वे ही तो आत्मा का सही उपचार बता पाएंगे। ध्यान रखना - शरीर यदि निरोगी न बन सका तो कोई बात नहीं लेकिन आत्मा का यदि इस मनुष्य जन्म में भी उपचार नहीं किया तो फिर पता नहीं आगे मौका मिलेगा भी या नहीं।

-मुनिश्री आर्जवसागर

क्रियात्मक ध्यान में विवेक व सावधानी

गतांक से आगे..... *-प्रवचन : मुनिश्री आर्जवसागर*

उन अम्मा जी ने पड़िगाहन किया जब महाराजजी रुक गये तब तीन प्रदक्षिणायें दीं और हे स्वामी मनशुद्धि, वचनशुद्धि कायशुद्धि, आहार जलशुद्धि है मम गृह में प्रवेश कीजिए बोली। घर से दूर पड़िगाहन किया हो तो गृह के द्वार पर आने के समय पुनः शुद्धि बोलते हैं। फिर गृह प्रवेश के समय सर्वजन पैर धोकर चौके में प्रवेश करते हैं। लेकिन महाराजजी तुरन्त अन्दर नहीं जाते चौके के बाहर ही खड़े हो जाते हैं और जब तक श्रावक बोलेंगे कि हे स्वामी! भोजनशाला में प्रवेश कीजिए! तब महाराजजी अन्दर जायेंगे एकदम बैठ नहीं जायेंगे हे स्वामी उच्चासन ग्रहण कीजिए! बोलेंगे तभी बैठेंगे फिर प्रादप्रक्षालन किया, पूजा की, फिर बोली कि मनशुद्धि, वचनशुद्धि, कायशुद्धि, आहार-जल शुद्ध है भोजन ग्रहण कीजिए नमोस्तु महाराजजी बोली। हो गयी न नवधाभक्ति 1. पड़िगाहन 2. उच्चासन 3. पादप्रक्षालन 4. पूजन 5. मनशुद्धि 6. वचनशुद्धि 7. कायशुद्धि 8. आहार जलशुद्धि 9. नमोस्तु ये नवधाभक्ति कहलाती है। फिर महाराजजी को आहार दिखाया, जो जो त्याग था सो उठवा दिया फिर गद्-गद् भावों से आहार दिया और लजिए, और लीजिए अभी तो कुछ लिया ही नहीं है। सब लेने के बाद भी बोलते हैं कुछ लिया ही नहीं है और महाराजजी लोग तो सब लेते भी नहीं हैं पूरा-पूरा तो लेते ही नहीं हैं, बहुत त्यागी रहते हैं, रस परित्याग भी करते हैं आप लोग जैसे आहार नहीं लेते। वहाँ उस अम्मा ने महाराजजी को सम्पूर्ण आहार कराया फिर महाराजजी को बिठाया स्तुति भजन भी पढ़ लिये फिर महाराजजी से पूछा कि महाराजजी हमें छोटा-सा नियम लेना है। क्या लेना है? मुझसे कुछ दोष लग गया है, मैं रोज जीवानी करती हूँ, कुएँ से पानी निकालती हूँ सूर्य प्रकाश भी न दिखे ऐसे मोटे छन्ने को दुहरा (डबल) लगाती हूँ उससे पानी छानती हूँ फिर उस जीवानी को विधिवत् (कुंदे वाली बाल्टी से) नीचे कुएँ में छोड़ती हूँ। मतलब ऊपर से नहीं फेकती हूँ। देखो भैया आज एक बूँद में 36,450 बताये हैं अब इलॉक्ट्रानिक माइक्रॉस्कोप से देखा गया कि एक बूँद पानी में करीब पाँच लाख से भी अधिक जीव बताये हैं और अपना जैन धर्म तो और सूक्ष्म है जिसका वैज्ञानिक लोग परमाणु बोल रहे हैं वह हमारे यहाँ स्कन्ध है परमाणु और भी छोटा है तो हमारे जैन धर्म से पूछा जाय तो एक बूंद पानी में असंख्यात जीव हैं। मैंने स्वयं एक बार देखा था कि एक बूंद रखी है जिसमें कुछ नहीं दिख रहा है और उस प्लेट को जब लेन्स के नीचे देखा तो कोपर के बराबर वह बूंद दिख रही है और मक्खी के समान असंख्यात जीव यहाँ वहाँ भाग रहे हैं; अरे भगवान्! एक बूंद पानी में इतने जीव हैं तो एक ग्लास में कितने होंगे एक बाल्टी में कितने होंगे आज ऐसे ही बहा देते हैं। या लोग गट्-गट् पी भी जाते हैं तो सभी जीव मर जाते हैं बैक्टीरिया-वायरस उत्पन्न करते हैं और वे ही वायरस रोगों को उत्पन्न करते हैं। खूब ट्रीटमेन्ट करते हैं।

खूब दवाईयाँ सौंफ-सुपाड़ी के समान खाते रहते हैं। इसलिए आज बहुत हास्पिटल बन रहे हैं। एडमिट होने को जगह नहीं है। ये क्यों हो रहा है? लोगों का अशुद्ध खान-पान है इसलिए और निर्मल भावों का होना भी मुश्किल है जिससे उत्तम ध्यान हो सके। इस प्रकार से उस अम्मा ने कहा कि महाराजजी जब मैं जीवानी छोड़ रही थी तब हाथ काँपने से छन्ने से थोड़ी-सी नीचे गिर गयी। तब थोड़ी-सी जीवानी नीचे गिरने से जो बड़ा पाप लगा मैं अणुव्रती हूँ इसलिए मुझे प्रायश्चित्त दीजिएगा। जैसा काल रहता है वैसा प्रायश्चित्त दिया जाता है। महाराजजी ने कहा तुम्हें रोज दो व्रतियों को आहार कराना है। कोई कठिन नहीं है महाराज; कराते ही हैं; महाराजजी रोज ही चौका रहता है। महाराजजी ने कहा ठीक है कराते रहना। हाँ महाराजजी हम तो कराते रहेंगे लेकिन प्रायश्चित्त कब पूरा होगा? महाराजजी ने कहा- जिस दिन तुम्हारे यहाँ असिधारा व्रत वालों का आहार होगा-तब तुम्हारा प्रायश्चित्त पूरा होगा। असिधारा व्रत किसको कहते हैं? शादी होने के बाद भी जो ब्रह्मचर्य से रहते हैं उसका नाम है असिधारा व्रत। एक साथ रहते हुए भी ब्रह्मचर्य से रहते हैं। तो ऐसे व्रत वाले जब तुम्हारे घर पर आ जायेंगे तो तुम्हारा प्रायश्चित्त पूरा हो जायेगा। तो हमें कैसे मालूम पड़ेगा महाराजजी हम किस-किस से पूछेंगे इस संबंध में? तो उन्होंने कहा तुम्हारा प्रायशचित्त पूरा हो गया; इसके लिए एक संकेत तुम्हारे चौके में होगा जो चंदोवा लगा है वह काला पड़ गया है। जिस दिन तुम्हारा प्रायश्चित्त पूरा हो जायेगा उस दिन वह चंदोवा सफेद हो जायेगा। बस; वह रोज ही देखने लग गई व्रती लोग आये कई दिन निकले लेकिन सफेद नहीं हुआ। एक दिन वह अवसर आया कि एक पति-पत्नि गृह पधारे आमंत्रण तो किया ही था। बहुत अच्छे से नीचे देखते हुए आ रहे थे। यहाँ-वहाँ नहीं देखते थे ज्यादा कुछ बात भी नहीं करते थे। बहुत ही सादगी, बहुत गंभीरता थी। आइये बोला, घर के सामने खड़े हो गये वे और जब पैर धोने के लिए पानी दिया तब पैर धोके अन्दर आये, फिर खड़े हो गये, फिर चौके में बुलाया तो चौके में आये, बैठिये कहने के बाद बैठे। भोजन दिखाया तो बहुत कुछ चीजें त्याग थीं, वे चीजें उठवा दीं ऐसा लग रहा है कि आज ऐसा तो नहीं है कि इनसे हमारा प्रायश्चित्त पूरा होने वाला है। इनको देख कर ऐसा लग रहा है ये कहीं मुनिराज के पास रहे हों और ये आर्यिका के पास रही हों ऐसा लग रहा है। इतनी पवित्रता, शुद्धता, गम्भीरता है। भोजन करने के लिए निवेदन किया, फिर हाथ धो लिया एक-एक चीज को अच्छे से शोध लिया। हाथ धोकर कायोत्सर्ग किया और सिद्धभक्ति पढ़ कर आहार शुरु किया और बीच-बीच में परोसते समय इशारे से कुछ मना करते जा रहे थे। तुम लोग तो नहीं करते हो लाओ-लाओ रखो-रखो कहते हो? कि मना करते हो? श्रावक मना नहीं करते किसी को दुःखी नहीं करते हो न? मँगा ही लेते हो। कुछ लोग ऐसे भी रहते हैं मालूम हैं? एक जगह क्या हुआ कि एक बार एक दामाद साहब या लालाजी ससुराल आये हुये थे। जब भोजन करने बैठे तो दामाद साहब देख रहे थे कि पापड़ सामने ही तलकर रखा हुआ है लेकिन परोस नहीं

रही हैं। मंगा तो सकते नहीं और मौन भी नहीं था। तो दामाद साहब ने सासूजी से कहा सासूजी आज मेरा मन हो रहा है कि आपको एक कथा सुनाऊँ। अच्छा सुनाओ। मैं एक बार बड़े घोर जंगल में गया था। जंगल में? हाँ जंगल में। वहाँ बहुत से प्राणी देखे थे। शेर, चीता, हाथी देखा और एक बहुत बड़ा सर्प देखा। सर्प? हाँ सर्प! कितना बड़ा था? यहाँ से लेकर उस पापड़ तक था, तो सासूजी को पापड़ याद आ गया अरे पापड़ नहीं परोसा; फिर परोस दिया। सासूजी थोड़ी अलग प्रकृति की थी। घी की कठोरी ठंडे पानी में रखती थी तो घी जमा रहता था। जब घी परोसने का नम्बर आये तो कटोरी को 'हूँ' करके एक तरफ रख देती थी। दामाद साहब बहुत परेशान; 'हूँ' करके रख देती है घी तो आता ही नहीं। थोड़ा सासूजी पानी लेने अन्दर चली गयी तब तक दामाद साहब ने घी की कठोरी को आँच दिखा के रख दी। सासूजी आयी और खिचड़ी परोसी और घी डालने के लिए घी की कठोरी उठायी और 'हूँ' कर दी तो पूरा घी थाली में चला गया। अब सासूजी बोलती हैं दामाद साहब आज मुझे एक इच्छा हो रही है। क्या इच्छा? आज आपके साथ भोजन करने की इच्छा हो रही है। आ जाओ! जब भोजन करने बैठी तो खिचड़ी में ऐसी लकीर बनायी कि पूरा घी अपनी तरफ आ गया! तो भय्या इतने विकल्प रहते हैं लोगों को जब भोजन करते हैं तो तरह-तरह की बातें करते हैं अतः अपना मन प्रशस्त होना चाहिए। राग द्वेष रूप विकल्प निकल गया तो ध्यान अच्छा हो जायेगा। लोगों को इतना समाधान नहीं रहता है; कहते हैं कि जो व्यक्ति मौन से आहार करते हैं जो आ जाय थाल में कुछ भी इशारा नहीं करते हैं जैसा है वैसा ले लेते हैं उनके अन्तराय कर्म का क्षय होता है क्योंकि तुम्हारा अगर लाभान्तराय कर्म होगा तो तुम्हारी थाली में वह वस्तु नहीं आयेगी उस लाभान्तराय कर्म के उदय से तो वस्तु आकर भी कोई न कोई बाधा उपस्थित हो जायेगी। बताइए वह घी पूरा नहीं मिलना था अतः उसने लकीर बना ली। अर्थात् अपना-अपना कर्म कितना तीव्र प्रभाव दिखाता है ये इससे जान लो और साथ-साथ में अपना-अपना अन्तराय कर्म क्षय करो उसके लिए तुम्हें क्या करना पड़ेगा मौन के साथ आहार ग्रहण करो। महाराजजी लोग तो अन्तराय कर्म का क्षय कर रहे हैं। अन्तराय का नियम है अतः उनके आहार में मानो कि कोई बाल आ गया या जीव आ जाये तो अन्तराय कर देते हैं क्योंकि अन्तराय कर्म क्षय को प्राप्त हो जायेंगे; नहीं तो कभी भी आयेगा। अतः इसी जन्म में क्षय कर दो, क्योंकि अनादि काल के बहुत सारे कर्म काटना हैं इसलिए नियम लेते हैं। आप लोगों का नियम नहीं है और बाल आ गया तो अलग किया और खाया, फिर अन्तराय कर्म क्षय नहीं होंगे। आपको एक काम करना है! मौन के साथ आहार लेओ। जो भी हमको परोसे उसमें सन्तुष्टी रखें। इशारा मत करो। तुमने इशारा कर दिया तो अन्तराय कर्म नहीं निकलेगा। भोजन होने के बाद; कम परोसने वाले को डांट दिया तो भी नहीं निकलेगा। बिल्कुल भी कुछ मत बोलो और ये सोचो कि दाने-दाने पर लिखा है खाने वाले का नाम।

क्रमशः ....

जैन न्यायवादियों या न्यायविदों की गणितीय न्याय में पहुँच

(आधुनिक न्यायशास्त्र के संदर्भ में शोधार्थियों को एक प्रेरणा)

प्रोफेसर एल.सी. जैन, जबलपुर

गतांक से आगे ....

उपर्युक्त ऐतिहासिक व्युत्पत्ति (derivation) के दूरगामी परिणाम निकले, जबकि राशि-सिद्धान्त को स्वयं-सिद्धात्मक आधार दिये गये। उपर्युक्त में (1) वाक्य स्पष्टरूप से सिद्ध करता है, वह ऐसा स्वयंसिद्ध है, गुणधर्म संबंधी, जिसमें परिसीमा का उल्लंघन हो गया है। उसमें ही अनन्त स्वयंसिद्धों का समावेश हो गया है, न कि वह केवल एक ही स्वयंसिद्ध (axom) है।

इसके प्रकाश में हम जब चौदह धाराओं में आने वाले प्रथम पद और अन्तिम पद का निर्धारण करते हैं तो हमें उन सभी प्रक्रियाओं को न्याय की कसौटी पर रखना होता है, जिसमें निम्नलिखित पर विचार करना आवश्यक हो जाता[2] -

1. क्या अनन्त राशि से बड़ी अनन्त राशि का अस्तित्व है और उसे सिद्ध किया जा सकता है, तथा क्या उसे निर्मित किया जा सकता है?
2. किसी भी गणात्मक (cardinal) राशि को क्या सुक्रमबद्ध किया जा सकता है? राशि विशेषत: जब अनन्तात्मक हो।
3. क्या गणना संक्रिया से असंख्येय एवं अनन्त राशि उत्पन्न की जा सकती है? धवलादि में शलाका संगणन की कुछ विशेष प्रक्रियाएं बतलाई गयी हैं, उनका न्याय शास्त्रों में क्या महत्व है?
4. न्यायशास्त्रों में अनन्त राशि का अर्द्धादि किस प्रकार प्रमाणित किया जा सकता है? यह धाराओं के दिग्दर्शन के लिए अनिवार्य है?
5. जैन न्यायशास्त्रों की अनेक जटिल विधियां आधुनिक न्यायशास्त्र की विधियों से कहाँ तक तुलना की वस्तुएँ हैं?

अब हम देखें कि श्री वीरसेनाचार्य द्वारा निबद्ध धवला टीका में गणितीय न्याय राशियों के दत्त प्रमाणों को कहाँ तक सुव्यवस्थित करता है। उनके अनुसार, ''विद्वान पुरुष सम्यग्ज्ञान को प्रमाण कहते हैं, नामादिक के द्वारा वस्तु में भेद करने के उपाय को न्यास या निक्षेप कहते हैं और ज्ञाता के अभिप्राय को नय कहते हैं। इस प्रकार युक्ति से पदार्थ का ग्रहण अथवा निर्णय करना चाहिये'' (घवला पु. 3,पृ.18)।

कथन

1. [3]शाश्वतानन्त धर्मादि द्रव्यों में रहता है, क्योंकि धर्मादिद्रव्य शाश्वतिक होने से उनका कभी भी विनाश नहीं होता है। जो गणनानन्त है, वह बहुवर्णनीय और सुगम है। एक परमाणु को अप्रदेशिकानन्त कहते हैं ।

शंका – द्रव्यत्व के प्रति अविशिष्ट ऐसे शाश्वतानन्त और अप्रदेशानन्त का नोकर्म द्रव्यानन्त में अंतर्भाव क्यों नहीं हो जाता है?

समाधान – नहीं, क्योंकि, शाश्वतानन्त का नोकर्म द्रव्यानन्त में तो अन्तर्भाव होता नहीं है, इन दोनों में परस्पर भेद है।

स्पष्टीकरण – अन्त विनाश को कहते हैं, जिसका अन्त नहीं होता है, उसे अनन्त कहते हैं। द्रव्य शाश्वतानन्त है और नोकर्म द्रव्यगत अनन्तता की अपेक्षा और कटकादि के वस्तुतः अन्त के अभाव की अपेक्षा अनन्त है, इसलिये इन दोनों में एकत्व नहीं हो सकता है। एक प्रदेशी परमाणु में उस एक प्रदेश को छोड़कर अन्त इस संज्ञा को प्राप्त होने वाला दूसरा प्रदेश नहीं पाया जाता है, इसलिये परमाणु अप्रदेशानन्त है। ऐसी स्थिति में द्रव्यगत अनन्त संख्या की अपेक्षा अनन्त संज्ञा को प्राप्त होने वाले नोकर्मद्रव्यानन्त में वह अप्रदेशानन्त कैसे अन्तर्भूत हो सकता है, अर्थात् नहीं हो सकता है, इसलिये अप्रदेशानन्त भी स्वतंत्र है?

शंका – द्रव्य के प्रति एकत्व तो उनमें पाया ही जाता है?

समाधान – इन अनन्तों में यदि द्रव्य के प्रति एकत्व पाया जाता है तो रहा आवे, परन्तु इतने मात्र से इन अनन्तों में अन्य-अन्य प्रकार से आये हुए आनन्त्य के प्रति एकत्व नहीं हो सकता है।

यही थी श्री वीरसेनाचार्य की न्याय शैली! आगम का आधार था पूर्वापर विरूद्धादि दोषों के समूह से रहित और सम्पूर्ण पदार्थों के द्योतक आप्त वचन। आप्त वचन। आप्त, अठारह दोषों रहित होने से, सत्य वचन ही का कथन करता है।

2. [4]वह एक ज्ञापक सूत्र लेते हैं, 'मिथ्यादृष्टि जीव काल की अपेक्षा अनन्तानन्त अवसर्पिणियों और उत्सर्पिणियों के द्वारा अपहृत नहीं होते हैं।' दोनों ही राशियाँ अनन्तानन्त हैं परन्तु उनके मान अलग-अलग हैं। एक दूसरे से बड़ा है, तभी एक-दूसरे के द्वारा अपहृत नहीं हो सका है। दोनों राशियों का अस्तित्व है। प्रथम राशि को जघन्य अनन्तान्त पर वर्गित प्रक्रिया से अनेक राशियाँ उत्पन्न की जाती हैं

जिनमें अनेक अनन्तात्मक राशियाँ प्रक्षिप्त होती हैं और अन्ततः अर्द्धच्छेद प्रक्रियाओं आदि के पश्चात् मिथ्यादृष्टि राशि को प्राप्तकर बतलाया जाता है।

वहाँ एक तो अनन्तात्मक राशियों में परिकर्माष्टक आदि गणित प्रक्रियाओं का प्रयोग न्याय-शास्त्र के अनुसार है। वे कहते हैं-'अनन्तानन्त के विषय में गुणकार और भागहार अजघन्यानुत्कृष्ट अर्थात् मध्यम अनन्तानन्त रूप ही होना चाहिये।' यह वचन परिकर्म नामक टीका में है जो सम्भवतः कुन्दकुन्द एलाचार्य की है। पुनः वे कथन करते हैं - 'ऊपर जो जघन्य परीतानन्त से विशेषाधिक कह आये हैं वह विशेषाधिक असंख्यात रूप है'- यह बात असिद्ध नहीं है, क्योंकि व्यय होने पर समाप्त होने वाली राशि को अनन्तरूप मानने में विरोध आता है। इस प्रकार कथन करने से अर्धपुद्गल परिवर्तन का राशि के साथ क्या व्यभिचार हो जायेगा? वे कहते हैं - यह बात नहीं, क्योंकि अर्धपुद्गलपरिवर्तन काल को उपचार से अनन्त रूप माना गया है।

3. [5]स्थूल और सूक्ष्म संबंधी न्याय भी गणित का विषय बनता है। क्या क्षेत्र प्रमाण का उल्लंघन करके काल प्रमाण का कथन किया जा सकता है? वीरसेनाचार्य समाधान देते हैं - 'जो स्थूल और अल्पवर्णनीय होता है, उसका पहले ही कथन करना चाहिए।' फिर शंका होती है - 'काल प्रमाण की अपेक्षा क्षेत्रप्रमाण बहुवर्णनीय कैसे है?' वीरसेन पुनः समाधान देते हैं - 'क्षेत्र प्रमाण में लोक प्ररूपण करने योग्य है। उसका भी जगच्छ्रेणी के प्ररूपण बिना ज्ञान नहीं हो सकता है। इसलिए जगच्छ्रेणी का प्ररूपण करना चाहिये। जगच्छ्रेणी का भी रज्जु के प्ररूपण के बिना ज्ञान नहीं हो सकता है, इसलिये रज्जु का प्ररूपण करना चाहिये। रज्जु का भी उसके अर्धच्छेदों का कथन किये बिना ज्ञान नहीं हो सकता है, इसलिये रज्जु के छेदों का प्ररूपण करना चाहिये। रज्जु के छेदों का भी द्वीपों और सागरों के प्ररूपण के बिना ज्ञान नहीं हो सकता है, इसलिये द्वीपों और सागरों का प्ररूपण करना चाहिये। परन्तु काल प्रमाण में, इस प्रकार बड़ी प्ररूपणा नहीं है, अतः काल प्रमाण की प्ररूपण की अपेक्षा क्षेत्र प्रमाण की प्ररूपण अतिसूक्ष्म रूप से वर्णित है, यह बात जानी जाती है।

एक और श्लोक वे उद्धृत करते हैं, क्या इसी के समर्थन में?-

> सुहुमो य हवदि कालो तत्तो य सुहुमदरं हवदि खेतं।
> अंगुल-असंखभागे हवंति कप्पा असंखेज्जा ।।10।।

नहीं! वे कहते हैं कि यह घटित नहीं क्योंकि इससे क्षेत्र प्ररूपणा के अनन्तर द्रव्य-प्ररूपणा का प्रसंग प्राप्त होता है। कारण यह है कि अनन्त परमाणुरूप प्रदेशों से निपन्न एक द्रव्यांगुल में अवगाहन की अपेक्षा एक क्षेत्रांगुल ही है। किन्तु गणना की अपेक्षा अनन्त क्षेत्रांगुल होते हैं, इसलिए उपर्युक्त न्यायसगंत नहीं।

4. [6]आधुनिक गणितीय राशि न्याय सिद्धान्त में एक-एक, एक-अनेक संवाद (correspondence) द्वारा राशियों की समानता-असमानता आदि स्थापित करने को अत्यधिक महत्त्वपूर्ण माना गया है, जिनका प्रयोग गैलिलियो, कैण्टर आदि ने किया। इसे ही वीरसेनाचार्य ने शंकाकार की शंका- 'काल प्रमाण की अपेक्षा मिथ्यादृष्टि जीवों का प्रमाण कैसे निकाला गया है?' होने पर उसे निम्न प्रकार समाधानित किया है जो 'दिगम्बर जैन इतिहास' की उत्कृष्ट सूझबूझ है - 'एक और अनन्तानन्त अवसर्पिणियों और उत्सर्पिणियों के समयों को स्थापित करके और दूसरी ओर मिथ्यादृष्टि जीवराशि के प्रमाण को कम करते हुए चले जाने पर अनन्तानन्त अवसर्पिणियों और उत्सर्पिणियों के सब समय समाप्त हो जाते हैं, परन्तु मिथ्यादृष्टि जीवराशि का प्रमाण समाप्त नहीं होता है।'

जब शंकाकार कहता है कि मिथ्यादृष्टि जीवराशि का प्रमाण भले ही समाप्त हो जाये, परन्तु काल के सम्पूर्ण समय समाप्त नहीं होते, क्योंकि धर्मद्रव्य और लोकाकाश के तीनों ही समान होते हुए स्तोक हैं तथा जीवद्रव्य, पुद्‍गलद्रव्य, काल के समय और आकाश के प्रदेश ये उत्तरोत्तर वृद्धि की अपेक्षा अनन्त गुणे हैं। वीरसेनाचार्य तब उत्तर देते हैं कि यहाँ अतीत काल को ही ग्रहण किया गया है, सम्पूर्ण काल राशि को नहीं। कहा भी है -

कालो तिहा विहत्तो अणागदो वट्‍टमाणतीदो य।
एदेसु अदीदेण दु मिणिज्जदे जीव रासी दु ।।21।।

किसी भी अनन्तात्मक राशि से बड़ी अनन्तात्मक राशि बनाने की विकर्ण विधि खोजने का श्रेय जार्ज कैण्टर को है। जैसे प्राकृत संख्याएँ जो एक से अनन्त तक जाती हैं, उनकी राशि को गण्य कहा जाये, तो उसकी तुलना में सम्पूर्ण रीयल (real) संख्याओं की राशि को अगण्य कहा जाता है। इसके विस्तृत विवरण से पता चलता है कि भंग विधि द्वारा ही एक अनन्त से बड़े अनन्त एक-एक या एक-अनेक संवाद द्वारा निर्मित किया जा सकता है।[7]

5. [8]इसी प्रकार वीरसेनाचार्य पुनः ज्ञापकसूत्रा, 'क्षेत्रा प्रमाण की अपेक्षा अनन्तानन्त लोकप्रमाण मिथ्यादृष्टि जीव राशि का प्रमाण है,' लेते हैं और एक गाथा द्वारा इसे प्रतिबोधित करते हैं-जिस प्रकार कोई प्रस्थ से कोदों के समान सम्पूर्ण बीजों का माप करता है उसी प्रकार मिथ्यादृष्टि जीवराशि की लोक के अर्थात् मिथ्यादृष्टि जीवराशि अनन्त लोकप्रमाण है ।।22।।[9]

क्रमशः ....

सम्यक् ध्यान शतक

– मुनि आर्जवसागर

गतांक से आगे ....

धर्म ध्यान के भेद

आज्ञा, विचय, अपाय भी, अरु विपाक संस्थान।
चार धर्म ये ध्यान हैं, जग में शुभ हैं ध्यान।।

आज्ञा विचय

वीतराग की देशना, द्रव्य, तत्त्व उपदेश।
रत्नत्रय मय मोक्षमग, गहें मान आदेश।।

अपाय विचय

दुख मय यह संसार है, कुदर्श पाँचों पाप।
छोड़ें यही अपाय है, ध्यानी दें जिन जाप।।

विपाक विचय

कर्मों का जो पाक फल, भव सुख, दुख दे जान।
लख चौरासी योनि में, चउगति भ्रमत अजान।।

संस्थान विचय

तीन लोक का सब गणित, शुद्ध द्रव्य उपयोग।
मुनि संस्थान विचय करें, ध्यान रहा सद्योग।।

संस्थान विचय के भेद

पदस्थ अरु पिंडस्थ वा, हैं रूपस्थ सु–ध्यान।
रूपातीत महान ये, शिव–सुख दें कल्याण।।

पदस्थध्यान

मंत्र वाक्य का ध्यान हो, वीतराग शुभ रूप।
पदस्थ जानो ध्यान वह, हो एकाग्र स्वरूप।।

❖

णमोकार शुभ मंत्र है, सब मंत्रों का राज।
शीघ्र अशुभ विधि नाशकर, सिद्ध बनावे काज।।

❖

ओम् महा यह मंत्र है, परमेष्ठी का बीज।
द्वादशांग सागर कहें, भव सुख, शिव की चीज।।

क्रमशः ....

गुरु महाराज की पूजन

- हनुमान सिंह गूर्जर (तहसीलदार)
रामगंजमण्डी

पाद प्रक्षालन

ले प्रासुक नीर, शिरोधार्य करूँ, अनुशासन गुरु का हितकारी ।
करूँ पाद प्रक्षालन बार-बार, द्वय चरण गुरु के अघहारी।।
कभी शीश नवाऊँ, कभी दृष्टि झुकाऊँ, कभी चूमूँ चरण चमत्कारी ।
जय हो मुनि आर्जवसागर की, जो कृपा कर रहे अतिभारी ।।

विनय

कैसी कृपा की तुच्छ पर, करूणानिधि हे कृपानिधान ।
ऐसी दया हमेशा करना, रोज मैं धोऊँ चरण महान ।।
सदा लगाऊँ माथे चरणोदक, नित्य करूँ चरणों का ध्यान ।
त्याग ना देना इस जीवन में, मुझे आप रज चरण समान ।।

स्थापना

धन्य शिखर-माया के पारस, मुनिश्री आर्जव बने महान ।
चरण कमल हृदय में रखकर, मैं पूजूँ मम गुरु महान ।।
श्रद्धा से नतमस्तक होऊँ, याचक बन मैं करूँ आह्वान ।
गुरुवर मेरे आप पधारो, शुद्ध किया मैंने स्थान ।।

जल

सारी नदियाँ मैंने परखी, फिर पाया यह अमृत पेय ।
सारा आगम आपने जाँचा, बने स्वयं ज्ञाता और ज्ञेय ।।
अब किसकी मैं करूँ अपेक्षा, लगे जगत सारा मुझे हेय ।
अब तो शरण मुझे दो दाता, यही बचा एक मेरा ध्येय ।।
चरणों में जल अर्पित करके, सदा करूँ मैं उनका ध्यान ।
चरण कमल हृदय में रखकर, मैं पूजूँ मम गुरु महान ।।

चंदन

जन्म जन्मान्तर से भटका, मैं पागल, मूढ़ और अभिमानी ।
कुछ किया नहीं अब तक मैंने, हुई मुझे आज मुझसे ग्लानी ।।
आपके दर्शन से पहले, था निपट गँवार मैं अज्ञानी ।
अब मैं शरणागत आया, थोड़ी कृपा करो हे महाज्ञानी ।।
पावन चंदन अर्पित कर, मैं माँगू आपसे सम्यक् ज्ञान ।
चरण कमल हृदय में रखकर, मैं पूजूँ मम गुरु महान ।।

अक्षत

रत्नत्रय की राह कठिन, सब कहते हैं वह मुश्किल है ।
आपने मुझे विश्वास दिलाया, वे कहते हैं जो अटकल है ।।
सक्षम होकर चलूँ उस पर, जो मार्ग आपने दिखलाया ।
दो शिक्षा, सम्बल, तेज मुझे, मुझे आपने ठुकराया ।।
अक्षत यह स्वीकार करो, हे रत्नत्रय के परम सुजान ।
चरण कमल हृदय में रखकर, मैं पूजूँ मम गुरु महान ।।

पुष्प

वेदों को निस्सार मानने का, तुमने ही तो ज्ञान दिया ।
कठिन तपस्या कर तुमने, उन तीनों का अवसान किया ।।
तिनके का सहारा बहुत बड़ा, यदि जीवन डूबने वाला हो ।
फिर मेरी नैया क्यों डूबे, जब तुम जैसा रखवाला हो ।।
बार-बार मैं पुष्प चढ़ाऊँ, बार-बार करूँ गुणगान ।
चरण कमल हृदय में रखकर, मैं पूजूँ मम गुरु महान ।।

नैवेद्य

हम लोग क्षुधा के बस में हो, व्यर्थ जीवन जीते आएँ हैं ।
आप को लख कर जान गए, बड़ी गलती करते आएँ हैं ।।
आहार आपको देते प्रभू, देखो धन्ना सेठ भी घबराता ।
क्षुधा नाश का भाव लिए, उस हेतु इन्द्र भी ललचाता ।।
मैं भेंट करूँ नैवेद्य तुम्हें, मेरी भी क्षुधा का हो अवसान ।
चरण कमल हृदय में रखकर, मैं पूजूँ मम गुरु महान ।।

दीप

धर्म-अधर्म का भेद ना जाना, ना दृष्टि सम्यक् बन पाई ।
प्रयास विफल हो गए सारे, ना ज्ञान ज्योति मेरी जल पाई ।।
गुरु आपकी कृपा बिना, मैंने बहुत समय बर्बाद किया ।
आपके दर्शन से पहले, मैंने कोरा वाद-विवाद किया ।।
दीपक अर्पित सद् चरणों में, दूर करो मेरा अज्ञान ।
चरण कमल हृदय में रखकर, मैं पूजूँ मम गुरु महान ।।

धूप

सिंह-व्याघ्र आदि का भय था, मैं अष्टकर्मों से जकड़ा था।
उनके ही कुचक्र में फंस कर, उनमें ही नित्य रमता था ।।
आपके चरणों में आकर मैं, नियम-व्रत नित्य पाल रहा ।
व्यर्थ विलम्ब किया मैंने यह, दुःख मुझे निश दिन साल रहा ।।
धूप सुगंधित द्रव्य चरणों में, चढ़ा करूँ गुरु का बहुमान ।
चरण कमल हृदय में रखकर, मैं पूजूँ मम गुरु महान ।।

फल

आँखों युक्त मैं अंधा था, मुझे सत्य मार्ग ना दिखा कभी ।
मित्र-शत्रु मुझे शाश्वत लगते, लगते थे वे अटल सभी ।।
अब उनसे मेरा ध्यान हटा, मुझे शिव फल की अभिलाषा है।
अब मेरा कोई परिजन नहीं, बस केवल आप से आशा है ।।
मुझ किंकर पर दया करो, स्वीकार करो उत्तम फल पान ।
चरण कमल हृदय में रखकर, मैं पूजूँ मम गुरु महान ।।

अर्घ

सारा भव है मायारूपी, दिखता कुछ होता कुछ और ।
आप सा संयम जीवन पाऊँ, मिथ्यादृष्टि मिटे घनघोर ।।
सारे आश्रय पीछे छूटे, रहा नहीं मेरा निज ठोर ।
अभयदान का याचक हूँ, मैं क्षमायाचना कर पुरजोर ।।
अर्घ सहित मैं स्वयं समर्पित, हे सर्वगुण सम्पन्न प्रधान ।
चरण कमल हृदय में रखकर, मैं पूजूँ मम गुरु महान ।।

जयमाला

हे वीतरागी की प्रतिमूरत, प्रतिक्षण तीर्थंकर प्रतिभासित ।
जो जीते जी आदर्श बने, जिनसे जिन होता परिभाषित ।।
सत्पथ गामी धर्मप्रभावक, करुणानिधि अरु कृपानिधान ।
गाऊँ मैं गुरुकी जयमाला, वो महमानव वात्सल्यधाम ।।
पंचम काल में हे गुरुवर, वसुधा ये धन्य बनाई है ।
जिन दीक्षा के पालन में, चतुर्थ काल चर्या दर्शाई है ॥ 1॥

निस्पृह-निर्दोष आहार-विहार, तीर्थंकर याद दिलाये हैं ।
मूल गुणों के पालन में, तप-संयम के पाठ पढ़ाये हैं ॥ 2॥

निष्कलंक पालना धर्मों की, त्यागी सीख रहे तुमसे गुरुवर ।
निर्मल-निर्मोही परिचर्या, कोई सीखे भला तुमसे आकर ॥ 3॥

समता-संयम के सागर हो, गुणी बता रहे हैं गा-गा कर ।
कठिन साधना महाव्रतों की, जन सीख रहे हैं आ-आ कर ॥ 4॥

विनय-विवेक में विशाल आप, मेरे एकमात्र अधिनायक हो ।
दिव्य देशना के अनुरागी, आप जिनवाणी के गायक हो ॥ 5॥

आप दिगम्बर महा नायक, आवश्यक गुप्ति समिति पालक हो।
राग-द्वेष, उपसर्ग विजेता, अतिकुशल संघ संचालक हो ॥ 6॥

हे रत्नत्रय के महा साधक, आपने उनकी महिमा बढ़ाई है ।
सम्यग्दर्शन चारित्र पाद, सम्यग्ज्ञान की ज्योति जलाई है ॥ 7॥

हो सुलभ आपको परम लक्ष्य, मेरी पावन अभिलाषा है ।
अब मेरा भी उद्धार करो, मुझे यही आपसे आशा है ॥ 8॥

आप ज्ञान विशारद, दोष निवारक, इन्द्रियजयी बलशाली हो ।
कृपा बर्षाओ सब जग पर, चहुँ ओर यहाँ खुशहाली हो ॥ 9॥

जो दीन-हीन कबके जग में, उन सबाके गले लगाया है ।
मुझे मिले श्री चरण सेव, मैंने यह लक्ष्य बनाया है ॥ 10॥

है श्री आर्जवसागर सा सुन्दर नाम, हे सर्वश्री सिद्ध पावनधाम ।
हे निर्मल निर्मोही-निष्काम, हे मेरे गुरुवर तुम्हें प्रणाम ॥ 11॥

(अर्घ सहित मैं ''सिंह'' समर्पित, कहता गुर्जर हूँ हनुमान ।
चरण कमल हृदय में रखकर, मैं पूजूँ मम गुरु महान ।।)

सूचना : मुनिश्री 108 आर्जवसागर जी महाराज के प्रवचन प्रत्येक सोमवार से शुक्रवार रात्रि 9.20 से पारस चैनल पर अवश्य सुनें ।

महावीराचार्यप्रणीतः
गणितसारसंग्रहः

गतांक से आगे .... अनुवादक : प्रो. एल.सी. जैन

नन्दाग्न्यृतुशरचतुस्त्रिद्वन्द्वैकं स्थाप्यमत्र[2] नवगुणितम् ।
आचार्यमहावीरैः कथितं नरपालकण्ठिकाभरणम् ॥१०॥
षट्त्रिकं पञ्चषट्कं च सप्त चादौ प्रतिष्ठितम् । त्रयस्त्रिंशत्संगुणितं कण्ठाभरणमादिशेत्[3] ॥११॥
हुतवहगतिशशिमुनिभिर्वसुनयगतिचन्द्रमत्र संस्थाप्य ।
शैलेन तु गुणयित्वा कथयेदं रत्नकण्ठिकाभरणम् ॥१२॥
अनलाब्धिहिमगुमुनिशरदुरिताक्षिपयोधिसोममास्थाप्य ।
शैलेन तु गुणयित्वा कथय त्वं राजकण्ठिकाभरणम् ॥१३॥
गिरिगुणदिविगिरिगुणदिविगिरिगुणनिकरं तथैव गुणगुणितम् ।
पुनरेवं गुणगुणितम् एकादिनवोत्तरं विद्धि ॥१४॥
सप्त शून्यं द्वयं द्वन्द्वं पञ्चैकं च प्रतिष्ठितम् । त्रयः सप्ततिसंगुण्यं[4,10] कण्ठाभरणमादिशेत् ॥१५॥
जलनिधिपयोधिशशधरनयनद्रव्याक्षिनिकरमास्थाप्य ।
गुणिते तु चतुःषष्ट्या का संख्या गणितविद्ब्रूहि ॥१६॥
शशाङ्केन्दुखैकेन्दुशून्यैकरूपं निधाय क्रमेणात्र राशिप्रमाणम् ।
हिमांशुरन्ध्रैः प्रसंताडितेऽस्मिन् भवेत्कण्ठिका राजपुत्रस्य योग्या ॥१७॥

इति परिकर्मविधौ प्रथमः प्रत्युत्पन्नः समाप्तः ।

१ श्लोक १० से १५ तक केवल M और B में प्राप्य हैं । २ सभी हस्तलिपियों में 'स्थाप्य तत्र' पाठ है । ३ B शे । ४ B नयं १० सभी हस्तलिपियों में छंद रूपेण अशुद्ध पाठ "कण्ठाभरणं विनिर्दिशेत्" है ।

की रचना करती है ॥१०॥ ३ को छः बार, ६ को पाँच बार, और ७ को एक बार अवरोही क्रम से (इकाई के स्थान की ओर) लिखकर, इस संख्या का ३३ से गुणन करने पर एक प्रकार के हार की संख्या प्राप्त होती है ॥११॥ इस प्रश्न में, ३, ४, १, ७, ८, २, ४ और १ अंकों को इकाई के स्थान से ऊपर की ओर के क्रम में लिखने पर संख्या का ७ से गुणन करो; और तब कहो कि वह रत्न कंठिका नामक आभरण है ॥ १२ ॥ १४२८५७१४३ संख्या को लिखकर उसे ७ से गुणित करो; और तब कहो कि वह राजकण्ठिका आभरण है ॥१३॥ इसी तरह, ३७०३७०३७ को ३ से गुणित करो । इस गुणनफल को फिर गुणित करो ताकि गुणक क्रमशः एक से लेकर ९ तक हों ॥१४॥ ७, ०, २, २, ५ और १ अंकों को (इकाई के स्थान से ऊपर की ओर के क्रम में) रखते हैं । और इस संख्या को ७३ से गुणित करते हैं । प्राप्त संख्या को कण्ठ आभरण कहते हैं ॥१५॥ इकाई के स्थान से ऊपर की ओर अंक ४, ४, १, २, ६ और २ क्रमानुसार लिखकर, प्ररूपित संख्या को ६४ से गुणित करने पर हे गणित विद्ब्रूहि, बतलाओ कि कौन सी संख्या प्राप्त होगी ? ॥१६॥ इस प्रश्न में, इकाई के स्थान से ऊपर की ओर १, १, ०, १, १, ०, १ और १ अंकों को क्रमानुसार रखने से एक विशेष संख्या का मान होता है; और तब इस संख्या में ९१ का गुणा करने पर राजपुत्र के योग्य कण्ठहार प्राप्त होता है ॥१७॥

इस प्रकार, परिकर्म व्यवहार में, प्रत्युत्पन्न नामक परिच्छेद समाप्त हुआ ।

(१०) इसमें तथा अन्य गाथाओं में कुछ संख्याएँ विभिन्न प्रकार के हारों की रचना करती हुई मानी गई हैं; क्योंकि उनमें एक से अंकों का शीघ्र ही दृष्टिगोचर होनेवाला सम्मितीय विन्यास रहता है ।

(११) यहाँ गुण्य ३३३३३३६६६६६७ है ।

(१४) यह प्रश्न, स्वतः, इस रूपमें अवतरित हो जाता है : ३७०३७०३७ × ३ को १, २, ३, ४, ५, ६, ७, ८ और ९ द्वारा क्रमानुसार गुणित करो ।

भागहारः

द्वितीये भागहारकर्मणि करणसूत्रं यथा—

¹विन्यस्य भाज्यमानं तस्याधःस्थेन भागहारेण। सदृशापवर्तविधिना भागं कृत्वा फलं प्रवदेत् ॥१८॥

अथवा—

प्रतिलोमपथेन भजेद्भाज्यमधःस्थेन भागहारेण। सदृशापवर्तनविधिर्यद्यस्ति विधाय तमपि तयोः॥१९॥

अत्रोद्देशकः

दीनाराष्टसहस्रं द्वानवतियुतं शतेन संयुक्तम्। चतुरुत्तरषष्टिनरैर्भक्तं कोंऽशो नुरेकस्य ॥२०॥
रूपाग्रसप्तविंशतिशतानि कनकानि यत्र भाज्यन्ते। सप्तत्रिंशत्पुरुषैरेकस्यांशं² ममाचक्ष्व ॥२१॥
दीनारदशसहस्रं त्रिशतयुतं सप्तवर्गसंमिश्रम्। नवसप्तत्या पुरुषैर्भक्तं³ किं लब्धमेकस्य ॥२२॥
⁴अयुतं चत्वारिंशच्चतुस्सहस्रैकशतयुतं हेम्नाम्⁵। नवसप्ततिवसतीनां दत्तं वित्तं किमेकस्याः ॥२३॥
⁶सप्तदशत्रिशतयुतान्येकत्रिंशत्सहस्रजम्बूनि। भक्तानि नवत्रिंशन्नरैर्वदैकस्य भागं त्वम् ॥२४॥

---

१ यह श्लोक P में प्राप्य नहीं है। २ K स। ३ M कोंऽशो नुरेकस्य। ४ यह श्लोक P में प्राप्य नहीं है। ५ B और K हेमम्। ६ इस श्लोक में दिये गये प्रश्न का पाठ M में निम्न प्रकार है—

त्रिशतयुतैकत्रिंशत्सहस्रयुक्ता दशाधिकाः सप्त।
भक्ताश्चत्वारिंशत्पुरुषैरेकोनैस्तत्र दीनारम् ॥

भागहार [भाग]

परिकर्म क्रियाओं में द्वितीय, भागहार क्रिया का नियम निम्नलिखित है—

भाज्य को लिखकर उसे उभयनिष्ठ (साधारण) गुणनखंडों को अलग करने के रीति के अनुसार भाजक द्वारा भाजित करो। भाजक को भाज्य के नीचे रखो और तब, परिणामी भजनफल को प्राप्त करो ॥१८॥ अथवा—यदि सम्भव हो, तो उभयनिष्ठ गुणनखंड को निरसित करने की विधि से, भाज्य के नीचे भाजक को रखकर, भाज्य को प्रतिलोम विधि से अर्थात् बायें से दायें भाजित करना चाहिये ॥१९॥

उदाहरणार्थ प्रश्न

६४ व्यक्तियों में ८१९२ दीनार बाँटे गये हैं। प्रत्येक व्यक्ति के हिस्से में कितने आये हैं? ॥२०॥ मुझे एक व्यक्ति का हिस्सा बतलाओ जब कि २७०१ स्वर्ण के टुकड़े ३७ व्यक्तियों में बाँटे जाते हैं। ॥२१॥ १०३४९ दीनार ७९ व्यक्तियों में बाँटे जाते हैं। बतलाओ एक व्यक्ति को क्या प्राप्त होगा? ॥२२॥ १४१४१ स्वर्ण के टुकड़े ७९ मंदिरों में दिये जाते हैं। बतलाओ प्रत्येक मंदिर में कितना धन दिया जाता है? ॥२३॥ ३१३१७ जम्बू फल (गुलाबी सेव) ३९ व्यक्तियों में बाँटे गये हैं। प्रत्येक का अंश (हिस्सा) बतलाओ? ॥२४॥ ३१३१३ जम्बू फल १८१ व्यक्तियों में बाँटे गये हैं। प्रत्येक का अंश

---

(२०) मूल गाथा में ८१९२ को ८००० + ९२ + १०० द्वारा लिखित किया गया है।
(२२) मूल गाथा में १०३४९ को १०००० + ३०० + $(७)^2$ द्वारा निदर्शित किया गया है।
(२३) यहाँ १४१४१ को १०००० + (४० + ४००० + १ + १००) द्वारा कथित किया गया है।
(२४) यहाँ ३१३१७ को १७ + ३०० + ३१००० द्वारा दर्शाया गया है।

त्र्यधिकदशत्रिशतयुतान्येकत्रिंशत्सहस्रजम्बूनि । सैकाशीतिशतेन प्रहृतानि नरैर्वदैकांशम् ।।२५।।
त्रिदशसहस्री सैकाषष्टिद्विशतीसहस्रषट्कयुता । रत्नानां नवपुंसां दत्तैकनरोऽत्र किं लभते ।।२६।।
एकादिषडन्तानि क्रमेण हीनानि हाटकानि सखे । विधुजलधिबन्धसंख्यैर्नरैर्हृतान्येकभागः कः।।२७।।
त्र्यशीतिमिश्राणि चतुःशतानि चतुस्सहस्रान्नगान्वितानि ।
रत्नानि दत्तानि जिनालयानां त्रयोदशानां कथयैकभागम् ।।२८।।

इति परिकर्मविधौ द्वितीयो भागहारः समाप्तः ।।

वर्गः

तृतीये वर्गपरिकर्मणि करणसूत्रं यथा—

द्विसमवधो घातो वा स्वेष्टोनयुतद्वयस्य सेष्टकृतिः । एकादिद्विचयेच्छागच्छयुतिर्वा भवेद्वर्गः ।।२९।।

---

१ यह श्लोक केवल M में प्राप्य है ।

२ M एकद्वित्रिचतुःपञ्चषट्कैर्हीनाः क्रमेण संभक्ताः ।
सैकचतुःशतसंयुतचत्वारिंशज्जिनालयानां किम् ।।

बतलाओ ? ।।२५।। ३६२६१ मणि ९ व्यक्तियों को बराबर-बराबर दिये जाते हैं । एक व्यक्ति कितने मणि प्राप्त करता है ? ।।२६।। हे मित्र, एक से आरम्भ कर ६ तक के अंकों को इकाई के स्थान से ऊपर की ओर के क्रम में रखकर और फिर क्रमानुसार ह्रासित अंकों द्वारा संरचित संख्या की सुवर्ण-मुद्राएँ ४४१ व्यक्तियों में वितरित की जाती हैं । प्रत्येक को कितनी मिलती हैं ? ।।२७।। २८४८३ मणि १३ जिन मंदिरों में भेंट स्वरूप दिये जाते हैं । प्रत्येक मंदिर को कितना अंश प्राप्त होता है ? ।।२८।।

इस प्रकार, परिकर्म व्यवहार में, भागहार [भाग] नामक परिच्छेद समाप्त हुआ ।

वर्ग

परिकर्म क्रियाओं में तृतीय [वर्ग करने की क्रिया] के नियम निम्नलिखित हैं—

दो सम राशियों का गुणनफल; अथवा दो सम राशियों में से किसी एक चुनी संख्या को प्रथम राशि में से घटाकर प्राप्त फल तथा दूसरी राशि में उस चुनी हुई संख्या को जोड़ने से प्राप्त फल, इन दोनों फलों के गुणनफल में उस चुनी हुई संख्या का वर्गफल जोड़ने पर प्राप्तफल, अथवा, गुणोत्तर श्रेढि (जिसमें प्रथमपद १ है और प्रचय २ है) का अ पदों तक का योगफल, उस इच्छित राशि का वर्ग होता है ।।२९।। दो या तीन या इससे अधिक संख्याओं का वर्ग, उन सब संख्याओं के वर्ग के योग

---

(२५) यहाँ ३१३१३ को १३ + ३०० + ३१००० द्वारा दर्शाया गया है ।

(२६) यहाँ ३६२६१ को ३०००० + १ + (६० + २०० + ६०००) द्वारा दर्शाया गया है ।

(२७) यहाँ दिया गया भाज्य, स्पष्ट रूप से, १२३४५६५४३२१ है ।

(२८) यहाँ २८४८३ को ८३ + ४०० + (४००० × ७) द्वारा निरूपित किया गया है ।

(२९) बीजगणित द्वारा बतलाये जाने पर यह नियम इस तरह का रूप लेता है—

(i) अ × अ = अ^{२} (iii) (अ + क) (अ − क) + क^{२} = अ^{२} (iii) १ + ३ + ५ + ७ + ... अ पदों तक = अ^{२}

क्रमशः ....

मौनः ध्यान में एक आवश्यक

मन, प्रबन्ध और ध्यान विभिन्न दर्शनों व विज्ञान के आलोक में एक समीक्षात्मक अध्ययन डी.लिट् की उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध प्रबंध की रूपरेखा से संदर्भित विषय ।

अनुसंधानकर्ता-डॉ. संजय कुमार जैन

प्रकृति का स्वभाव है मौन ।
प्रकृति की सांकेतिक भाषा है मौन ।
समय और ऊर्जा की बचत होती है मौन से।
एक निश्चित अर्थ जो बिना किसी बाधा के दूसरे तक पहुंचता है मौन ।
संवाद आवश्यक नहीं होता मौन में।
उलझनें पैदा नहीं होती मौन से।
प्रकृतिदत्त मानसिक शक्ति का विकास करता है मौन।
हमारी प्रवृत्ति है मौन।
संवाद में असरकारक होता है मौन
हम कितनी अनचाही स्थितियों से बचाता है मौन।
मितभाषी व्यक्ति की कार्यक्षमता बढ़ती है मौन से।
आत्मबल ऊंचा रहता है मौन से।
सकारात्मक ऊर्जा बढ़ती है मौन से।
सटीक संवाद है मौन।
सफलता व प्रतिष्ठा प्राप्त होती है मौन से।
संवाद की कला है मौन।
नजरिया और जीवन बदल देता है मौन।
मानसिक शांति प्रदान करता है मौन
ध्यान में आवश्यक है मौन ।

हम प्रकृति के अंश के रूप में जन्म में लेते हैं, विकसित होते हैं और फिर एक दिन प्रकृति में ही समा जाते हैं। इस जीवन प्रक्रिया में हम प्रकृति से बहुत कुछ ग्रहण करते हैं। प्रकृति सिर्फ वायु, जल, अन्न, फल-फूल ही नहीं, जिंदगी के कई सबक भी सिखाती है, बशर्ते हम समझें।

हमने संवाद के लिए भाषा का विकास किया। भाषा भावों की अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम

बन गई। शब्दों के जरिये हम एक-दूसरे को जानते-समझते हैं पर भाषा ही वह धारदार हथियार भी है, जिसका सही इस्तेमाल न किया जाए, तो बहुत सी मुश्किलें खड़ी हो जाती हैं।

हमेशा सधा हुआ और सटीक बोलना सबके लिए संभव नहीं होता है। ज्यादातर लोग ज्यादा वक्त गैर जरूरी बातें करते हैं और समय व ऊर्जा व्यर्थ गंवाते हैं। ऐसे वक्त कई बार अर्थ का अनर्थ हो जाता है, रिश्तों में दरार पड़ जाती है, बनती बात बिगड़ जाती है। अनावश्यक बोलने वालों का कोई भरोसा नहीं कि क्या कह जाएं।

जरा अपने आस-पास फैली प्रकृति पर नजर डालें। कितनी शांति फिर भी सबको प्रसन्नता देने वाली। प्रकृति की अपनी भाषा है, अपने संकेत हैं, चाहे पक्षियों की चहचहाहट हो या पत्तों की सरसराहट। सबका एक निश्चित अर्थ है, जो बिना किसी बाधा के दूसरे तक पहुंचता है।

प्रकृति में कभी कोई संवाद अनावश्यक नहीं होता। इसलिए वहां संवाद में होने वाली उलझनें पैदा नहीं होतीं बल्कि प्रकृति से मौन संवाद का महत्व और प्रभाव सीखा जा सकता है। जब मन बहुत उलझनों से घिरा हो, तो प्रकृति के सान्निध्य में सुकून पाता है क्योंकि प्रकृति की शांति को हम अपने भीतर अनुभव कर सकते हैं।

मौन, प्रकृतिदत्त मानसिक शक्ति का विकास करता है। दरअसल जिस तरह प्रकृति का स्वभाव है, उसी तरह हमारी प्रवृत्ति भी है। बस, हमें प्रकृति से प्रेरणा लेते हुए इसे पहचानने और विकसित करने की जरूरत है।

जरूरी है हम जानें कि आवश्यक संवाद कितना असरकारक होता है और इससे हम कितनी अनचाही स्थितियों से बच सकते हैं। मितभाषी व्यक्ति की कार्यक्षमता और आत्मबल ऊंचा रहता है। इससे समीचीन ज्ञान के योग्य सकारात्मक ऊर्जा बढ़ती है और मौन व सटीक संवाद का महत्व समझने वाले लोग सफलता व प्रतिष्ठा पाते हैं। अतः प्रकृति को निहारते समय अपने कान खुले रखें, जरूर कोई संदेश आपके लिए होगा, जो आपका नजरिया और जीवन बदल सकता है। इत्यलम।

संसार के आहार विशेषज्ञों के द्वारा घोषित शाकाहार की नौ विशेषताएं :-

(1) यह कोलेस्टेरोल को कम करता है। (2) मूत्राम्ल (यूरिक एसिड) को घटाता है। (3) पाचनतंत्र को रोगमुक्त करता है। (4) मधुमेह नहीं होने देता । (5) विषमुक्त होता है। (6) इसके उत्पादन में न्यूनतम उर्जा लगती है। (7) आरोग्य का कवच-रेशा (फायबर) से युक्त होता है जो मांसाहार में नहीं होता है। (8) रोगों से लड़ने वाला विटामिन-सी से भरपूर होता है, मांसाहार में नहीं होता है। (9) मनुष्य के शरीर के व सम्यक ध्यान के लिए सर्वथा उपयुक्त है यह शाकाहार।

साभार : हम कितने शाकाहारी?.. डालटनगंज (बिहार)

जैन तीर्थंकर और उनके लांछन

डॉ. श्रीमती अल्पना जैन, ग्वालियर

गतांक से आगे........

भारतीय पुरातत्वज्ञ रायबहादुर चन्दा का वक्तव्य है कि सिन्धु घाटी की सील मुहरों में उकेरी हुई मूर्तियों के अध्ययन क्रम में सील नं. द्वितीय एफ.जी.एच. में जो मूर्ति उत्कीर्ण है उसमें वैराग्य मुद्रा तो स्पष्ट है ही, पर उसके नीचे के भाग में ऋषभदेव के चिन्ह बैल का सद्‍भाव भी है।[22] डॉ. ज्योतिप्रसाद जैन 'भारतीय इतिहास एक दृष्टि' में उल्लेख करते हैं कि - सिन्धु घाटी सभ्यता में प्राप्त अवशेषों के आधार पर ऐसा प्रतीत होता है कि उसके पुरस्कर्ता प्राचीन विद्याधर जाति के लोग थे तथा उनके धार्मिक मार्गदर्शक मध्यप्रदेश के वे मानववंशी मूल आर्य थे जो श्रमण संस्कृति के उपासक थे। सम्भवनाथ तीर्थंकर का विशेष चिन्ह अश्व है और सिन्धु देश चिरकाल तक अपने सैन्धव अश्वों के लिए प्रसिद्ध रहा है। मौर्यकाल तक सिन्ध में एक सम्भूतक जनपद और सांभव (सबूज) जाति के लोग विद्यमान थे जो बहुत संभव है सम्भवनाथ तीर्थंकर की परम्परा से संबंधित रहे हों। इसी प्रकार सिन्धु सभ्यता में नागफण के छत्र से युक्त कलाकृतियाँ भी प्राप्त हुई हैं, जो सातवें तीर्थंकर सुपार्श्व की हो सकती हैं। इनका चिन्ह स्वास्तिक है और तत्कालीन सिन्धु घाटी में स्वस्तिक एक अत्यंत लोकप्रिय चिन्ह रहा है।[23]

पुरातात्विक दृष्टि से जिन तीर्थंकर प्रतिमाओं की चरण चौकी पर लांछनों के अंकन के प्रमाण प्राप्त हुए हैं। लांछन युक्त प्राचीनतम तीर्थंकर मूर्तियाँ गुप्तकाल की हैं, ये हैं - राजगिर (बिहार) से प्राप्त तीर्थंकर नेमिनाथ की एक अशंतः खण्डित मूर्ति उल्लेखनीय है जिस पर शंख का लांछन अंकित है और चन्द्रगुप्त के उल्लेख सहित एक गुप्तकालीन अभिलेख भी उस पर उत्कीर्ण है। इसको सर्वप्रथम रामप्रसाद चंदा द्वारा प्रकाशित किया गया।[24] भगवान महावीर की मूर्ति भारतकला भवन वाराणसी में सुरक्षित है तथा राज्य संग्रहालय भरतपुर में भी तीर्थंकर नेमिनाथ की ध्यान मुद्रा में उत्कीर्ण एक गुप्त कालीन प्रतिमा विद्यमान है जिसकी चरण चौकी पर उनका लांछन शंख अंकित है।[25] इससे ज्ञात होता है कि गुप्तकाल में तीर्थंकर लांछनों के अंकन की परम्परा थी पर व्यापक रूप में अंकन का कार्य जिन मूर्तियों पर नहीं होता था। गुप्तकाल में केवल चार जिनों (तीर्थंकर) ऋषभनाथ, नेमिनाथ, पार्श्वनाथ और महावीर के ही लांछन अंकन निश्चित रूप में प्राप्त हुए।[26]

वैभार पहाड़ी से गुप्तोत्तर काल का मूर्ति शिल्प आदिनाथ को प्ररूपित करती हुई लगभग सातवीं-आठवीं सदी (ए.डी.) की प्राप्त हुई है जिसकी पादपीठ पर प्रत्येक बाजू में वृषभ के द्वारा घेरे हुए धर्मचक्र है। वृषभ आदिनाथ का लांछन है जिन्हें अपने कंधों पर छाये हुए केश कुण्डल के द्वारा भी पहचाना गया है। लांछन धर्म चक्र के ऊपर या नीचे पादपीठ पर है।[27] नछनकुठर के निकट सीता पहाड़ी

से मध्यभारत में दो मूर्ति शिल्प प्राप्त हैं, जिनमें से एक कायोत्सर्ग मुद्रा में ऋषभनाथ हैं और अन्य पद्मासन मुद्रा में महावीर हैं। पादपीठ के दोनों सिरों पर लांछन प्रत्येक पर है जबकि धर्मचक्र सामान्यतया केन्द्र में है।[28] दोनों मूर्ति शिल्प कुषाणकाल से गुप्तकाल शैली में हुई संक्रमण की प्रथम श्रेणी को प्ररूपित करते हैं।[29]

निष्कर्षतः स्पष्ट है कि पुरातात्विक साक्ष्य बतलाते हैं कि तीर्थंकर जिन प्रतिमाओं की पादपीठ पर लांछनों का अंकन किया जाता रहा है। डॉ. उमाकान्त पी. शाह लिखते हैं कि जिनबिम्बों की पादपीठों पर लांछन चौथी या पाँचवीं ईस्वी सदी से दिये जाने लगे होंगे, परन्तु 8वीं-9वीं शती ई. के बाद जिन मूर्तियों पर लांछनों के अंकन का कार्य नियमित रूप से होने लगा।[30]

संदर्भ

(1) जैन कला एवं स्थापत्य, खण्ड 1, पृ. 15; (2) तीर्थंकर महावीर और उनकी आचार्य परम्परा, पृ. 5-6 (3) 'धर्म तीर्थमनधं प्रवर्तयन्', आचार्य समन्तभद्र स्वामी; (4) जैन तत्त्व विद्या, पृ. 16, मुनि प्रमाणसागर (5) तीर्थंकर महावीर और उनकी आचार्य परम्परा, पृ. 4; (6) वही, पृ. 5; (7) तीर्थंकर पार्श्वनाथ, पृ. 19; (8) जैन तत्त्व विद्या, पृ. 16, ऐनसाईक्लोपीडिया, भाग 2, पृ. 187; हिस्ट्री इ.सि., भाग 1, पृ. 163; कल्च. है. इं., भाग 1, पृ. 191; तीर्थंकर महावीर और उनकी आचार्य परम्परा, पृ. 6; (9) ऐन साईक्लोपीडिया, भाग 2, पृ. 186-187; (10) जम्मण काले जस्सदु दाहिण पायम्मि होई जो चिण्हं। तं लक्खण पाउत्तं आगनम सुत्ते सजिण देहं। त्रिकालवर्ती महापुरुष, पृ. 56; जैन धर्म का प्राचीन इतिहास, पृ. 24; (11) अभिधान चिंतामणि काण्ड 12, श्लोक 47-48; (12) प्राचीन तीर्थ जीर्णोद्धार, अक्टूबर 2006, पृ. 14, वंशे जगत्पूज्यतमे प्रतीतं पृथग्विर्य तीर्थकृतां यदत्र। तल्लांछनं संव्यवहार सिद्धयै विम्बे जिनस्येह निवेशयामि ।। प्रतिष्ठा सारोद्धार, पृ. 214, पृ. 115; (13) देवगढ़ की जैन कला एक सांस्कृतिक अध्ययन, पृ. 107; (14) वृषो गजोऽश्वः प्लवगः क्रौञ्चोऽब्जं स्वस्तिकं शशी । मकरः श्री वत्सः खड्गी महषिः शूकर स्तथा ।। 47।। कूयेनो वज्रं मृगश्छागो नन्द्यावर्ते धंरोऽपिच ।कूर्मो नीलोत्पलं शङ्खः फणी सिंहोऽर्हता ध्वजाः ।।48।। अभिधान चिंतामणि काण्ड 1; (15) जैन किरणमयी, जन./फर. अंक 1990 पृ. 52; (16) तिलोयपण्णत्ति, भाग 2, चउत्थोमहाहियारो गाथा 611-612, पृ. 175-176; जैनेन्द्र सिद्धान्तकोष, भाग 2, पृ. 379; अनगार धर्मामृत, 8/41, पृ. 583-584; जैन प्रतिमा विज्ञान, पृ. 103, 105-108, 112-114, 136, 254, 255; जैन कला एवं स्थापत्य, खण्ड 1, पृ. 15-17; अभिधान चिन्तामणि 1, 47-48 पृ. 17; त्रिकालवर्ती महापुरुष, पृ. 148; जैन तत्त्व विद्या, परिशिष्ट 1, पृ. 366; (17) प्राचीन भारतीय मूर्ति विज्ञान, पृ. 167, उपाध्याय वासुदेव; (18) आदित्य आदेश, नबम्वर 2006, पृ. 23; (19) मथुरा का सांस्कृतिक जैन पुरा वैभव, पृ. 27; (20) जैन धर्म का प्राचीन इतिहास, प्रथम भाग, पृ. 24; देवगढ़ की जैन कला, पृ. 107; (21) जैन धर्म का प्राचीन इतिहास, प्रथम भाग, पृ. 24; जैन धर्म का विकास, पृ. 205, बाजपेयी मधुलिका; ज्योति सन्देश अगस्त 1992 पृ. 1; (22) The Modern review Aug. 1932-Sindh Five thousands Years ago.

तीर्थंकर महावीर और उनकी आचार्य परम्परा, पृ. 14; अजेय दिगम्बरत्व जय गोम्मटेश, पृ. 14 - मुनि

अमितसागर; अहिंसा एवं पर्यावरण संरक्षण सिद्धान्तों का अक्षय स्रोत, पृ. 41-राजाराम जैन; (23) भगवान महावीर एक अनुशीलन प्राक्कथन, पृ. 17 - देवेन्द्र मुनि शास्त्री; (24) जैन प्रतिमा विज्ञान, पृ. 38; आ. सर्वे ऑफ इण्डिया 1925-26, पृ. 125-126; जैन कला एवं स्थापत्य खण्ड 3, पृ. 484; (25) भारत कला भवन संख्या 161; जैन प्रतिमा विज्ञान पृ. 38; राज्य संग्रहालय, भरतपुर, संख्या 16; कैटलॉग एण्ड गाइड, पृ. 11-12; (26) जैन प्रतिमा विज्ञान, पृ. 81; (27) Jain Art. and Architecture - A Ghosh द्वारा सम्पादित भाग 1, प्लेट 90; प्राचीन तीर्थ जीर्णोद्धार, अक्टूबर 2006, पृ. 13; (28) A.S.I., A.R., 1925-26, पृ. 125-126, प्लेट VI b Shah U.P., Studies in Jaina Art.; (Banaras, 1955) प्लेट VII; प्राचीन तीर्थ जीर्णोद्धार, अक्टूबर 2006, पृ. 13; (29) प्राचीन तीर्थ जीर्णोद्धार, अक्टूबर 2006, पृ. 13; (30) प्राचीन तीर्थ जीर्णोद्धार, अक्टूबर 2006, पृ. 14; जैन प्रतिमा विज्ञान, पृ. 38

''दीपावली पर आतिशबाजी-घोर हिंसक कृत्य''

परम पूज्य मुनि श्री 108 आर्जवसागर जी महाराज की भावना अनुसार शुभ चिंतन

दीपावली को जैन बन्धु भगवान महावीर के निर्वाण दिवस के रूप में मनाते हैं। भगवान महावीर ने विश्व को सत्य-अहिंसा एवं विश्व बन्धुत्व का उपदेश दिया, जिओ और जीने दो का महान संदेश दिया। हम उनके अनुयायी उन्हीं के निर्वाण दिवस पर अपने मनोरंजन के नाम पर अरबों-खरबों जीवों का घात करते हैं। क्या यह हमारे लिए शोभनीय है? यह विचारणीय विषय है।

एक समय था जब दीपावली एवं विवाह आदि शुभ-प्रसंगों के अवसर पर आतिशबाजी करने वालों को समाज द्वारा दण्डित किया जाता था। यहाँ तक कि कतिपय हठधर्मियों को समाज से बहिष्कृत भी कर दिया जाता था। परन्तु आज हम अपने धार्मिक आदर्शों को भुलाकर अपना वैभव प्रदर्शन करने एवं कुछ समय के मनोरंजन हेतु लाखों-करोंड़ों रुपयों की आतिशबाजी तो फूँक ही देते हैं साथ ही असंख्यात निरीह सूक्ष्म एवं बादर जीवों को असमय यमलोक पहुँचा देते हैं। क्या यही है हमारी अंहिसा पराणयता? क्या यही है महावीर का जिओ और जीने दो का संदेश? क्या हम महावीर के आदर्शों को अपमानित तो नहीं कर रहे हैं?

आतिशबाजी से होने वाली हानियाँ

(1) आतिशबाजी चलाने से अक्सर छोटे-बड़े अग्निकाण्ड हो जाते हैं। (2) चलाने वालों के हाथ-पैर आदि शारीरिक अंग जल जाते हैं, अधिक जलने पर मृत्यु भी हो सकती है। (3) पटाखे की भयानक आवाज से पशु-पक्षी एवं मानव भयभीत हो जाते हैं। (4) तेज आवाज से श्रवण शक्ति भी प्रभावित होती है। (5) धरती और आकाश में विचरण करने वाले असंख्य सूक्ष्म एवं बादर जीवों की हिंसा होती है। (6) हम अपना और देश का धन कुछ क्षण के मनोरंजन के लिए अग्नि को समर्पित कर देते हैं। (7) आतिशबाजी चलाने से इसके अतिरिक्त अनेकानेक दुर्घटनाएँ प्रकाश में आई हैं।

हमारा कर्तव्य है कि मानवता के लिए कलंक इस कृत्य को स्वयं तो करें ही नहीं अपने बच्चों और इष्ट मित्रों भी इससे बचाने का प्रयास करें। अपने कुछ क्षणों के मनोरंजन के लिए आतिशबाजी और पटाखे चलाकर असंख्य जीवों का घात नहीं करें। भगवान महावीर के उपदेशानुसार समस्त जीवों को अभय दान दें, यही हमारी महावीर के प्रति सच्ची विनयांजलि होगी एवं तभी हम महावीर की संतान कहलाने के अधिकारी होंगे।

निवेदक : पं. चन्द्रप्रकाश जैन 'चन्दर', प्रतिष्ठाचार्य, ग्वालियर

सागर में समर्पण व अमरता का वरण

मुनिश्री आर्जवसागर

अमृत-सी बूँदें जब,
पर्वत पर गिरती है,
पत्थर व मिट्टी के
ऊपर वे थमती हैं।

जल का वह कोष जो
रिस-रिस कर झरता है,
झरना बन कल-कल कर
सबका मन हरता है ।

पर्वत की छटा जहँ
मनोहारी लगती है,
वृक्ष, फल, फुलवारी
अहर्निश महकती है।

पक्षियों की ध्वनि शुभ
संगीत सम भाती है ,
जल की शुभ्र धारा वह
हृदय को सुहाती है।

बहता वह नीर जब
भूमि पर आता है,
सरिता का रूप लें
जग को नित भाता है।

कृषि को या ऋषि को भी
काम में नित आता है,
अनवरत प्रवाह भी वह
कर्त्तव्य सिखलाता है ।

नभ से वह मेघपटल
नीर को कुछ गाता है,
नहीं रुकना राह में व
बढ़ते नित जाना रे।

जग के तुम काम आना
न रुककर सड़ जाना रे !
दुर्गन्धित वह कीच-सा
जीवन ना भाता है।

ज्ञानियों की सीख है
लगती भी ठीक है,
बहना ही संस्कृति है
रुकना सो विकृति है ।

एक जगह जो मोह कर
रुककर थम जाता है,
दोषों का कोश बन
जग में न भाता है ।

अनवरत ही बहोगे तुम
सागर से मिलोगे तुम,
भूमि-सा मैलापन;
टलेगा विभावीपन ।

कीचड़ बनना यह
स्वभाव ना है तेरा,
मैलापन न धुला तो
कर्ज का है घेरा ।

सम्पर्क रहे पर का तो
भारी हो भरमाना,
अब भी सुन बात मेरी
जग में तुम जग जाना।

बहकर तुम; क्षीर सागर-
नीर में समा जाओ,
इक जगह से निर्मम बन
स्व स्वरूप पा जाओ।

असीम इस सागर में,
समर्पित जो होता है,
सागर की गहराई में
रत्नों को पाता है।

मेघों का ये जल भी जब
क्षीर मय बन जाता है,
सूर्य की तपन से वह
पुनः मेघ बन भाता।

स्वाति के योग में जब
सीप में वह जाता,
मोती के रूप में आ
कनक मीत बन भाता।

हम भी तो नीर हैं
क्यों सहते पीर हैं,
बहते, बढ़ते जायेंगे
सागर में मिल भायेंगे।

गुणों के सागर उन
गुरु से गुण पायें,
अनन्त गुण के पुञ्ज बन
निज को हैं महकायें।

जिनवर में तन मन हों
पावन ये लोचन हों,
समर्पण से जीवन में
कर्मों का मोचन हो।

सिद्धों का पद पा जो
शिखामणि बनता है,
मोती उन रत्नों की
शोभा भी हरता है।

अनंतकालिक सुखों व
ज्ञान दर्श की सहजता है
यही तो अमरता है,
यही तो अमरता है ।

''सिद्धचक्र महामण्डल विधान, विश्वशांति यज्ञ एवं रथोत्सव''

इंदौर, सोशल ग्रुप के इतिहास में पहली बार दिगम्बर जैन सोशल ग्रुप, ''इन्दौर नगर'' द्वारा अष्टान्हिक महापर्व पर दिनांक 8 जुलाई से 16 जुलाई के मध्य श्री सिद्धचक्र महामण्डल विधान का आयोजन पंडित रतनलालजी शास्त्री के सानिध्य एवं ब्र. भैय्याद्वय श्री अनिलजी एवं श्री अभयजी के मार्गदर्शन में उदासीन आश्रम, एम.जी. रोड, इन्दौर पर किया गया।

डॉ. रमा जैन ''पवैया कृति सम्मान'' से नवाजी गई

अखिल भारतीय बुन्देलखण्ड साहित्य एवं संस्कृति परिषद महाराज छत्रसाल की जयंती को प्रतिवर्ष बुन्देली समारोह के रूप में मनाते हुए विविध आयोजनों के साथ-साथ बुंदेली साहित्य के एक रचनाकार को ''पवैया कृति सम्मान'' से सम्मानित करती है। इस वर्ष महाराजा कालेज, छतरपुर की रिटायर्ड प्राध्यापक डॉ. रमा जैन द्वारा लिखित लोकप्रिय कृति ''परिनिष्ठित बुंदेली का व्याकरणिक अध्ययन'' को ''पवैया कृति सम्मान'' हेतु चुना गया एवं भारत भवन में आयोजित एक भव्य समारोह में प्रशंसित किया गया। यह पुस्तक एम.ए. हिन्दी के विद्यार्थियों एवं शोधार्थियों के बीच एक उपयोगी पुस्तक के रूप में प्रसिद्ध है। इसके अलावा डॉ. रमा जैन की जैन धर्म व आध्यात्म पर कई पुस्तकें छप चुकी हैं। वे शाकाहार एवं अहिंसा के प्रचार-प्रसार हेतु यूरोपीय देशों इंग्लैण्ड, फ्रांस, बेल्जियम, हालैण्ड, जर्मनी, स्विट्जरलैण्ड एवं इटली की यात्रा कर चुकी हैं। साहित्यकार, स्वतंत्रता संग्राम सेनानी एवं पूर्व विधायक स्व. डॉ. नरेन्द्र विद्यार्थी की पत्नी डॉ. रमा जैन आज भी 78 वर्ष की आयु में लेखन कार्य से सम्बद्ध हैं।

डॉ. सुमति प्रकाश जैन, छतरपुर

रामगंजमंडी में अपूर्व धर्म प्रभावना

संत शिरोमणी आचार्य परम पूज्य श्री विद्यासागर जी महाराज के धर्म प्रभावकशिष्य परम पूज्य मुनि श्री आर्जवसागर जी महाराज एवं पूज्य क्षुल्लक श्री हर्षितसागर जी महाराज का भव्य मंगल प्रवेश दिनांक 18.07.2011 को प्रातः 7.30 बजे बैण्ड बाजों के साथ हुआ। जुलूस में महिलायें केसरिया वस्त्र पहने मंगल कलश लेकर चल रही थी पुरुष वर्ग श्वेत वेश भूषा में थे जगह-जगह पर मुनि श्री का पाद प्रक्षालन एवं आरती उतारी गई। 51 स्वागत द्वार बनाये गये बड़े उल्लास एवं उमंग के साथ मुनिश्री की का विशाल जुलूस नगर की परिक्रमा करता हुआ प्रातः 8.30 बजे श्री शान्तिनाथ दिगम्बरजैन मंदिर जी में पहुँचा। मुनिश्री ने रत्नत्रय पालन व मिथ्यात्व का त्याग करने का भव्य उपदेश दिया। ज्ञान की अक्षुण्ण धारा रामगंजमण्डी में प्रवाहित हो रही है। दिनांक 20.07.11 से प्रातः 6 बजे मुनिश्री ससंघ बैंड बाजों के साथ 1 कि.मी. दूर श्री शान्तिनाथ दिगम्बर जैन नाशियाँ जी में मंगल प्रवेश कराया गया, चातुर्मास कलश की स्थापना श्री दिगम्बर जैन नशियाँ में हुई। कलश की स्थापना श्री आचार्य विद्यासागर धर्म प्रभावना संघ, जयपुर वालों ने तथा स्थानीय चार परिवारों ने ली।

मुनिश्री के मुखारविन्द से अपूर्व धर्म प्रभावना हो रही है। भक्तजन पुण्यार्जन कर अपने जीवन को सार्थक कर रहे हैं दिनांक 13.08.11 से 13.09.11 तक 32 दिवसीय षोडशकारण पर्व व्रत महोत्सव प्रारंभ हो रहा है जिसमें 72 पुरुष महिलायें षोडश कारण व्रत करके प्रकृति का बंध करने में अपना नाम जोड़ने के लिए उत्सुक रहे। षोडश कारण व्रत महोत्सव में मंगल कलश की स्थापना श्रीमान स्व. अनन्त कुमार जी बागड़िया के परिवार में श्री चक्रेश कुमार एवं आदित्य कुमार बागड़िया ने की। इसी परिवार में श्री शान्तिनाथ दिगम्बर जैन नाशियाँ की तीनों वेदी तथा उसमें श्रीजी विराजमान किये तथा कलशारोहण एवं ध्वज भी इसी परिवार ने अपने चंचल लक्ष्मी का उपयोग करके किया था। मुनिश्री के मंगल प्रवचन प्रतिदिन प्रातः 8.30 बजे होते हैं जिसमें अनेक भक्तजन उपस्थित रहते हैं। दोपहर में 3.30 बजे रत्नकरण्ड श्रावकाचार आदि की कक्षायें लग रही हैं जिसमें अनेक भक्तजन इन ग्रन्थों का स्वाध्याय करके सम्यग्दर्शन आदि को प्राप्त कर रहे हैं। सायंकाल 6.45 बजे गुरुभक्ति एवं पाठशाला के बच्चों को ज्ञान का अर्जन कराया जा रहा है। इस प्रकार मुनिश्री के सान्निध्य में रामगंजमण्डी का वातावरण राममय हो गया है। दिनांक 02.09.11 से 11.09.11 तक पयूर्षण पर्व में अनेक प्रदेशों से आये श्रावकों ने श्रावक साधना संस्कार शिविर में भाग लेकर हमारी समाज को आतिथ्य करनेका अपूर्व सौभाग्य प्राप्त कराया। दशलक्षण कलश की स्थापना का सौभाग्य श्री अमर कुमार जैन (प्रोफेसर) परिवार को मिला।

मुनिश्री वास्तव में बहुत सरल हैं जैसा नाम आचार्य श्री ने रखा है उसे सार्थक किया है। मैं यही सोचता हूँ कि साधु होना तो सरल है लेकिन सरल होना बहुत कठिन है जो आपकी साधना का फल है। चार पंक्तियों के माध्यम से मैं यही कहूँगा –

यदि सूर्य कहूँ तो आग है, यदि चांद कहूँ तो दाग है।
यदि गुलाब कहूँ तो कांटों की चुभन है,
यदि समुद्र कहूँ तो झाग ही झाग है ।
पर मेरे पूज्य गुरु के अंग-अंग में वैराग्य ही वैराग्य है।
सूर्य के तेज को कोई नाप नहीं सकता, समुद्र के जल को कोई माप नहीं सकता ।
चन्द्रमा की चांदनी सा शीतल कोई छा नहीं सकता,
उसी प्रकार आर्जवसागर के गुणों को कोई गा नहीं सकता।

अन्त में यही कहूँगा –

जिसने नहीं देखा उसको कभी उसकी मूरत क्या होगी । हे गुरु तेरी सूरत से अलग, भगवान की सूरत क्या होगी ।।
मुनि में ज्ञान की गहराई, चारित्र की ऊँचाई एक साथ झलकी है। आपकी ज्ञान सुगन्धि हर एक दिल में महकी है ।।

श्री अमरकुमार जैन (प्रोफेसर) सा. नेकी

''श्रुतधाम बीना में मुनिश्री का चार्तुमास''

आचार्य श्री 108 विद्यासागर जी महाराज के परम शिष्य मुनि श्री 108 सरलसागर जी महाराज का वर्षायोग चार्तुमास ज्ञान तीर्थ-श्रुतधाम बीना के आध्यात्मिक प्रशस्त वातावरण में हो रहा है। प्रतिदिन प्रातः 8.30 से नियमसार ग्रन्थ की वाचना चल रही है।

''टी.टी. नगर जैन मंदिर, भोपाल में चातुर्मास''

आचार्य श्री 108 विद्यासागर जी महाराज के परम शिष्य मुनि श्री मार्दवसागर जी महाराज का चातुर्मास भोपाल स्थित श्री दिगम्बर जैन मंदिर, टी.टी. नगर में हो रहा है।

''बिना लक्ष्य के यात्रा करना व्यर्थ है-मुनि आर्जवसागर''

रामगंजमंडी में बह रही है धर्म की सरस गंगा

सांसारिक प्राणी को इतनी भी बात समझ नही आ पा रही है कि पुद्गल और जीव दोनों जुदा-जुदा हैं। इनका आपस में कोई प्रकार कोई सम्बन्ध नहीं है। जिसने इस भेद पर ध्यानाकर्षण किया वह इस भवसागर को पार कर पाया। इसके अलावा मानव ने पर को अपना लिया है, इसलिए वह अनन्तकाल से जगत में भटक रहा है। यह उद्‌बोधन श्री शांतिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर परिसर में चातुर्मास प्रवचनमाला में आचार्य 108 श्री विद्यासागर जी महाराज सा. के शिष्य मुनि 108 श्री आर्जवसागर जी महाराज सा. ने धर्मसभा को संबोधित करते हुए दिये।

मुनिश्री ने कहा कि जब कोई प्राणी पर को अपना मान लेता है तब उसे वह चीज नहीं मिल पाती जिसके लिए वह प्रयास कर रहा है। ध्यान के माध्यम से मन को वह एकाग्र तो करना चाहता है परन्तु उसका मन पर वस्तु में भटक जाने के कारण उसे ध्यान करने का फल नहीं मिल पाता है। जब तक ध्यान के द्वारा मन एकाग्र नहीं होगा तब तक वह अपने कर्म को नहीं जला सकता। जब तक कर्मों की निर्जरा नहीं हो जाती है, तब तक हमारा मोक्ष मार्ग प्रशस्त नहीं हो सकता है, उपयोग बदलने से ध्यान में अन्तर आ जाता है।

उन्होंने कहा कि उपवास करने का मतलब अपनी आत्मा के समीप वास करना होता है। उपवास के समय ध्यान करने से विशुद्धि बढ़ जाती है, आत्मा प्रवृत्ति से निवृत्ति की ओर जाती है। उन्होंने बताया कि उपवास के दौरान स्नान करना भी निषेध बताया गया है जिससे कि आरम्भादि से दूर हों और मुनि बनने की साधना हो सके। वर्तमान में मनुष्य अपनी ऊर्जा को बाहर की ओर बहा रहा है, इसलिए वह अपनी मंजिल तक नहीं पहुँच पा रहा है। वह अपने लक्ष्य से भटक रहा है। बिना लक्ष्य के यात्रा करना बेकार है, हमें गंतव्य स्थान तक पहुँचने के लिए किसी निश्चित प्लेटफार्म का निर्धारण करना होगा, बिना किसी लक्ष्य के हर किसी गाड़ी में चढ़ने उतरने से कोई भी मंजिल तक नहीं पहुँचा जा सकता।

अन्त में मुनिश्री ने कहा कि तीर्थंकर स्वयंभू होते हैं, उनमें स्वयं वैराग्य उत्पन्न होता है, उन्हें किसी साधु के पास बैठकर उपदेश सुनने की आवश्यकता नहीं पड़ती है। उन्होंने कहा कि ध्यान से आत्मा में ताजगी आ जाती है। एकता जगी तो एक ताजगी हो जाती है। लोक कल्याण की भावनाओं से किए गए कार्यों से कालान्तर में मोक्ष मिलना संभव है, जिसका जितना अभिप्राय अच्छा होता है, वह उतना ही महान हो जाता है। हमारे ध्यान की किरणें वर्तमान में पूरे विश्व में फैल रही हैं। उनको एकाग्र किए बिना केवलज्ञान नहीं हो पा रहा है। तीर्थकरों ने अपना घर बार छोड़कर शरीर से नाता तोड़कर घातिया कर्मों को जलाया है। तभी उन्हें केवलज्ञान हुआ है। इस जगत में केवल आकुलताएं ही हैं। बाहरी वस्तुओं से नाता तोड़े बिना आत्मा से नाता जुड़ना मुश्किल है। जिसने यह जान लिया कि मेरी आत्मा के अलावा मेरा कुछ भी नहीं है, यहाँ तक देह भी हमारी नहीं है, उसी को केवल ज्ञान हुआ है। नाव के बिना किनारा नहीं मिलता, तो नाव को छोड़े बिना भी किनारा नहीं मिलता। इससे पहले श्रीजैन पाठशाला के बच्चों ने मंगलाचरण किया, आचार्य श्री 108 विद्यासागर जी महाराज सा. के चित्र के सम्मुख विनोद कुमार हरसौरा ने दीप प्रज्जवलित कर मुनिश्री 108 आर्जवसागर जी महाराज को शास्त्र भेंट किया।

''गर्भस्थ शिशु की हत्या का आँखों देखा हाल''

अमेरिका में सन् 1984 में एक सम्मेलन हुआ था – **''नेशनल राइट्स टू लाइफ कन्वेन्शन''**। इस सम्मेलन में एक प्रतिनिधि ने डॉ. बर्नार्ड नेथेनसन के द्वारा Suction Abortion गर्भपात की बनाई गई अल्ट्रासाउण्ड मूवी फिल्म Silent Stream (गूँगी चीख) का जो विवरण दिया था वह इस प्रकार है –

''गर्भ की वह नन्हीं मासूम बच्ची 10 सप्ताह की थी व काफी चुस्त थी। हम उसे अपनी माँ की कोख में खेलते करवट बदलते और अंगूठा चूसते हुए देख रहे थे। उसके दिल की धड़कनों को भी हम देख पा रहे थे और वह उस समय 120 की साधारण गति से धड़क रहा था। सब कुछ सामान्य था, किन्तु जैसे ही पहले औजार (सक्शन पम्प) ने गर्भाशय की दीवार को छुआ, वह बच्ची डर से एक दम घूमकर सिकुड़ गई और उसके दिल की धड़कन काफी बढ़ गई। हालाँकि अभी तक किसी चीज ने उसके आरामगाह तथा उसके सुरक्षित क्षेत्र पर हमला नहीं किया था।

हम दहशत से भरे यह देख रहे थे कि किस तरह वह औजार उस नन्हीं-मुन्नी मासूम गुड़िया-सी बच्ची के टुकड़े-टुकड़े कर रहा था। पहले कमर, फिर हाथ-पैर आदि के टुकड़े ऐसे काटे जा रहे थे, जैसे वह जीवित प्राणी न होकर कोई गाजर-मूली हो। बच्ची दर्द से छटपटाती हुई सिकुड़कर घूम-घूमकर तड़पती हुई इस हत्यारे औजार से बचने का प्रयत्न कर रही थी। वह बुरी तरह डर गई थी कि एक समय उसके दिल की धड़कन 200 तक पहुँच गई। मैंने स्वयं अपनी आँखों से उसको सिर पीछे झटकते और मुँह खोलकर चीखने का

प्रयत्न करते हुए देखा। जिसे डॉ. नेथेनसन ने उचित ही **गूँगी चीख** या **मूक पुकार** कहा है।

अन्त में हमने वह नृशंस व वीभत्स दृश्य भी देखा, जब संड़ासी (तेज धार वाला औजार) उसकी खोपड़ी को तोड़ने के लिए तलाश रही थी और फिर दबाकर उसकी खोपड़ी को तोड़ रही थी, क्योंकि सिर का वह भाग बगैर तोड़े सक्शन ट्यूब के माध्यम से बाहर नहीं निकाला जा सकता था।

हत्या के इस वीभत्स खेल को सम्पन्न करने में करीब 15 मिनिट का समय लगा। इस दर्दनाक दृश्य की भयावहता का अनुमान इसी बात से लगाया जा सकता है कि जिस डॉक्टर ने यह गर्भपात किया था और जिसने मात्र कौतूहल बस इसकी फिल्म बनवा ली थी। उसने जब स्वयं इस फिल्म को देखा तो वह अपना क्लीनिक छोड़कर चला गया और फिर कभी वापिस नहीं आया।

साभार : ''गर्भपात'' श्री गोपीनाथ अग्रवाल

''श्री समवसरण महामण्डलविधान से अभूतपूर्व धर्म प्रभावना''

परम पूज्य सन्त शिरोमणी आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के मंगल आशीर्वाद से परम पूज्य मुनि श्री 108 आर्जवसागर जी महाराज ससंघ के पावन सानिध्य में श्री शान्तिनाथ दिगम्बर जैन नशियाँ जी में दिनांक 25 से 30 सितम्बर 2011 तक श्री समवसरण महामण्डल विधान का भव्य आयोजन किया गया जिसमें भारत के अनेक प्रान्तों से तथा आसपास के लगभग 30-40 नगरों से पधारे नर-नारियों ने भाग लेकर सातिशय परम पुण्य का अर्जन किया। यह विधान श्रीमान पुष्पेन्द्र कुमार, शिखरचन्द, कैलाशचन्द टोंग्या परिवार रामगंजमण्डी की ओर से कराया गया। इस विधान को विधि पूर्वक अशोकनगर से पधारे ब्र. भैया पंकज जी, पं. जय कुमार जी ललितपुर और पं. महावीर कुमार जी जैन भवानी मण्डी ने सम्पन्न कराया साथ में थे पं. ज्ञानचंद जी गरोठ। नित्य संगीतमय पूजन के साथ सैकड़ों भक्तजन भाव विभोर हो जाते थे।

समवसरण की भव्य रचना मात्र दो दिन में चक्रेश कुमार बागड़िया की देखरेख में हुई, ऐसा लगा कि वास्तव में साक्षात् जिनेन्द्र देव भगवान का समवसरण आ गया है। विधान समापन के बाद मुनिश्री के सानिध्य में विशाल भव्य रथयात्रा का आयोजन हुआ, जुलूस पूरे नगर में भ्रमण करते हुए श्री शान्तिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर में पहुँचा। मुनि श्री के आशीर्वचन के साथ विधान का समापन हुआ। टोंग्या परिवार की ओर से सम्पूर्ण समाज के लिये वात्सल्य भोज का आयोजन किया गया।

मुनि श्री के चातुर्मास में नगर में चारों ओर वातावरण धर्ममय हो रहा है, कई नर-नारी व्रत नियम-संयम साधना में अग्रसर हो रहे हैं। विधान निर्विघ्नशान्ति पूर्वक एवं सानन्द सम्पन्न हुआ।

- प्रो. अमरचन्द जैन

''पाठशाला सम्मेलन व कवि सम्मेलन का भव्य आयोजन''

रामगंजमण्डी में आगामी 1 अक्टूबर 2011 पर होने वाले भव्य आयोजन धार्मिक पाठशाला सम्मेलन में समूचे राजस्थान की पाठशालायें उनके बच्चों, शिक्षिकाओं एवं कमेटी के महानुभावों सहित पधारेंगी एवं अपने-अपने सांस्कृतिक कार्यक्रमों के साथ-साथ पाठशाला के अधिवेशन में भाग लेंगी, इस कार्य को भव्य व सुचारू रूप से सम्पन्न कराने हेतु भोपाल से श्रीमान पं. श्री लालचन्द जी ''राकेश'', श्रीमान श्रीपाल जी ''दिवा'', डॉ. अजित जैन एवं डॉ. सुधीर जैन भी पधारेगें जो विद्वान व कवि भी है। इसी तरह हमारे पुण्योदय से होने वाले कवि सम्मेलन में 2 अक्टूबर 2011 को स्थानीय एवं समूचे भारत के प्रतिष्ठालब्ध कवियों द्वारा जैन धार्मिक कवि सम्मेलन सम्पन्न होगा जिसमें लोग स्वरचित कविताओं की प्रस्तुति देकर पुरस्कारित एवं सम्मानित किये जावेंगे। प्रातः और अपरान्ह में हमारा सौभाग्य रहेगा कि हम मुनि संघ द्वारा भी कविताएँ सुनेंगे व अपने आपको धन्य समझेंगे। स्थानीय बाहर से पधारने वाले सभी भव्यों का कमेटी की ओर से आतिथ्य करने का हमें अपूर्व अवसर मिलता रहे। रामगंजमण्डी में आगामी 30 अक्टूबर 2011 रविवार मध्याह्न 2 बजे पिच्छिका परिवर्तन का भव्य आयोजन मुनिश्री 108 आर्जवसागर जी महाराज के ससंघ में सम्पन्न होगा हमारा आतिथ्य स्वीकार कर पुण्य लाभ लें।

प्रेषक : चक्रेश जैन (बागड़िया)

''डॉ. रमा जैन ''पवैया कृति सम्मान'' से नवाजी गई''

अखिल भारतीय बुन्देलखण्ड साहित्य एवं संस्कृति परिषद महाराज छत्रसाल को जयंती को प्रतिवर्ष बुंदेली समारोह के रूप में मनाते हुए विविध आयोजनों के साथ-साथ बुंदेली साहित्य के एक रचनाकार को ''पर्वया कृति सम्मान'' से सम्मानित करती है। इस वर्ष महाराजा कालेज, छतरपुर की रिटायर्ड प्राध्यापक डॉ. रमा जैन द्वारा लिखित लोकप्रिय कृति ''परिनिष्ठित बुंदेली का व्याकरणिक अध्ययन'' को ''पवैया कृति सम्मान'' हेतु चुना गया एवं भारत भवन में आयोजित एक भव्य समारोह में प्रशंसित किया गया। यह पुस्तक एम.ए. हिन्दी के विद्यार्थियों एवं शोधार्थियों के बीच एक उपयोगी पुस्तक के रूप में प्रसिद्ध है। इसके अलावा डॉ. रमा जैन की जैन धर्म व आध्यात्म पर कई पुस्तके छप चुकी है। वे शाकाहर एवं अहिंसा के प्रचार-प्रसार हेतु यूरोपीय देशों इंग्लैण्ड, फ्रांस, बेल्जियम, हालैण्ड, जर्मनी, स्विट्जरलैण्ड एवं इटली की यात्रा कर चुकीं हैं। साहित्यकार, स्वतंत्रता संग्राम सेनानी एवं पूर्व विधायक स्व. डॉ. नरेन्द्र विद्याथी की पत्नी डॉ. रमा जैन आज भी 78 वर्ष की आयु में लेखन कार्य से सम्बद्ध है, तथा कई महिला संगठनों एवं समाजसेवी संस्थाओं से जुडी हुई है।

डॉ. सुमति प्रकाश जैन, बेनीगंज, छतरपुर

भाव विज्ञान जैन धर्म प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता

नियमावली :

1. उत्तर लिखने वाले या उसके पारिवारिक सदस्य की भाव विज्ञान पत्रिका संबंधी आजीवन सदस्यता होनी अनिवार्य है। एक परिवार से एक ही उत्तर पुस्तिका स्वीकार्य होगी । अन्य नहीं।
2. प्रश्न पत्र के पेपर पर ही उत्तर लिखकर भेजें । फोटो कॉपी मान्य नहीं होगी।
3. उत्तर पुस्तिका पर अंक देने का भाव उत्तर पुस्तिका में वर्णित उत्तरों की शुद्धता, लिखावट एवं उम्र पर निर्भर करेगा। अल्प उम्र वाले प्रतियोगी को प्रमुखता दी जावेगी।
4. उत्तर लिखकर काट दिये जाने पर या घिस दिये जाने पर अंक नहीं दिये जावेंगे।
5. उत्तर पुस्तिका की प्रतियोगी को एक फोटोकॉपी करवा लेना चाहिये क्योंकि मुख्य उत्तर पुस्तिका में कोई गलती न हो एवं अगली भाव विज्ञान पत्रिका में आने वाले उत्तरों का प्रतियोगी मिलान कर सके।
6. पत्रिका पहुँचने के पन्द्रह दिनों के भीतर उत्तर अवश्य प्रेषित करें। पत्रिका प्रकाशित होने के एक माह के बाद प्राप्त उत्तर पुस्तिकाएँ प्रतियोगिता हेतु मान्य नहीं की जावेगी।
7. पुरस्कार की राशि मनीआर्डर या बैंक आदि से भेजी जावेगी। प्रतियोगी प्राप्त मूल्य का उपयोग अपने तीर्थ वंदना, पूजा द्रव्य दान, आहार दान, औषधदान, उपकरण दान, पाठशाला की यूनिफार्म आदि धर्म कार्य के द्रव्य में सम्मिलित कर सकते हैं।
8. अगली भाव विज्ञान पत्रिका में सभी श्रेणियों के पुरस्कार विजेताओं के नाम प्रकाशित किये जावेंगे।
9. उत्तर पुस्तिका डाक/पोस्ट से निम्न पते पर प्रेषित की जानी चाहिए।

डॉ. प्रोफेसर सुधीर जैन, 85, डी.के. कॉटेज, दानापानी रेस्टोरेंट के पास, ई-8 एक्सटेंशन, भोपाल (म.प्र.)

* **उपरोक्त प्रतियोगिता के बारे में हमारा उद्देश्य है कि बाल-युवा पीढ़ी भी स्वाध्याय के क्षेत्र में आगे बढ़े एवं घर-घर में चले धर्म संस्कार की पाठशाला।**

प्रथम पुरस्कार : 108 योग्य संख्यक मूल्य, द्वितीय पुरस्कारः 72 योग्य संख्यक मूल्य

तृतीय पुरस्कार : 57 योग्य संख्यक मूल्य

उत्तीर्ण प्रतियोगी परिचय

प्रथम श्रेणी

श्रीमती सुषमा कुलदीप जैन

228/12, न्यू रेलवे रोड, आदर्श नगर, गुड़गांव

द्वितीय श्रेणी

श्री हरीशचंद्र जैन

63/75, हीरापथ, मानसरोवर, जयपुर

तृतीय श्रेणी

प्रिया लल्लूलाल बैनाड़ा

4/23, समकित, शिवानंद मार्ग मालवीय नगर, जयपुर

उत्तर पुस्तिका - दिसम्बर 2010

1. तीर्थंकर 2. 16 3. पाण्डुक शिला
4. नमः सिद्धेभ्यः 5. हाँ 6. ना
7. हाँ 8. ना 9. 7 हाथ
10. कामदेव 11. सिंहसैन्य ।
12. विदेह क्षेत्र में पाँच कल्याणक, तीन कल्याणक, दो कल्याणक वाले तीर्थंकर होते हैं ।
13. 12 14. 9 15. सोलह भावना
16. समवसरण 17. सही 18. गलत
19. सही 20. सही

कृपया यहाँ से निकालें

भाव विज्ञान जैन धर्म प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता

समय : 15 दिन अंक 100

❉ 20 प्रश्नों में से प्रत्येक प्रश्न पर 5-5 अंक समान हैं।

❉ इन प्रश्नों में से एक प्रश्न का उत्तर दो लाइनों में वाक्य सहित लिखना अनिवार्य है।

❉ उत्तर राष्ट्र भाषा हिन्दी में ही लिखें, लिखकर काटे या मिटाये जाने पर अंक नहीं दिये जावेंगे।

सही उत्तर पर [✔] सही का निशान लगावें -

प्र.1 वर्षायोग कितने महीने का होता है?

3½ महीने [ ], 4 महीने [ ], 5 महीने [ ]

प्र. 2 भगवान पार्श्वनाथ ने किस संध्याकाल में मोक्ष प्राप्त किया था?

सायंकाल में [ ], मध्यान्ह में [ ] प्रातःकाल में [ ]

प्र.3 भगवान पार्श्वनाथ ने कितने मुनियों के साथ मोक्ष प्राप्त किया था?

पच्चीस [ ], छत्तीस [ ], अड़तालीस [ ]

प्र. 4 भगवान पार्श्वनाथ ने सम्मेदशिखर पर किस टोंक से मोक्ष प्राप्त किया था?

सिद्धवर टोंक [ ], स्वर्णभद्र टोंक [ ], सुवीर टोंक [ ]

हाँ या ना में उत्तर दीजिये -

प्र.5 शहद खाने से कोई दोष नहीं होता है ? [ ]

प्र.6 रात्रि भोजन त्याग से सियार मरकर प्रीतिंकर बना। [ ]

प्र.7 रात्रि भोजन त्याग से एक वर्ष में छः माह उपवास का फल प्राप्त होता है। [ ]

प्र.8 जमीकन्द अनन्तकाय वनस्पति की हिंसा नहीं है? [ ]

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए -

प्र.9 तीर्थोदय काव्य में सबसे अधिक पद्य .... के हैं ।

[दर्शनविशुद्धि भावना, शीलव्रतेष्वनतिचार भावना, अर्हत्भक्ति भावना]

प्र.10 राजा श्री पाल .... के काल में हुये ।

[भगवान पार्श्वनाथ, भगवान नेमिनाथ, भगवान महावीर]

प्र.11 तीर्थंकर प्रकृति का संचय .... तक होता है।

[चौथे गुणस्थान तक, छठे गुणस्थान तक, आठवें गुणस्थान के छठे भाग तक]

दो पंक्तियों में उत्तर दीजिये –

प्र.12 महापर्व सोलहकारण कब–कब मनाया जाता है।

....

....

सही जोड़ी मिलायें :–

प्र.13 विष्णुकुमार मुनि	700 मुनियों के गण नायक
प्र.14 हस्तिनापुर	श्रावण शुक्ला पूर्णिमा
प्र.15 रक्षा बन्धन पर्व	700 मुनियों का उपसर्ग दूर किया।
प्र.16 अकम्पनाचार्य	700 मुनियों का उपसर्ग हुआ ।

सही (✔) या (✕) गलत का चिन्ह बनाइये :–

प्र.17 भाद्रपद माह व्रतों का खजाना हैं । [ ]

प्र.18 सरलता के गुणों में आर्जव धर्म प्रकट होता है। [ ]

प्र.19 दशलक्षण धर्म एक वर्ष में एक ही बार आता है । [ ]

प्र.20 कालभैरवी ने सोलहकारण (व्रत) भावनाओं से भ. सीमन्धर पद प्राप्त किया। [ ]

आधार : जैनागम संस्कार

प्रतियोगी–परिचय

भाव विज्ञान सदस्यता की रसीद क्रमांक :

नाम .... उम्र ....

पिता/माता/पति का नाम ....

नगर या गाँव का नाम ....

पता..

....

मोबाईल/फोन नं. ....

सदस्यों को भाव विज्ञान प्रेषित करते समय लिफाफे के पते पर रसीद क्रमांक का लेख भी किया जाता है।

भाव विज्ञान परिवार

✳✳✳✳✳ शिरोमणी संरक्षक ✳✳✳✳✳

मेसर्स आर.के. ग्रुप, मदनगंज-किशनगढ़, अजमेर, ● श्री निर्मल कुमार झांझरी, डीमापुर (नागालैंड)

✳✳✳✳ परम संरक्षक ✳✳✳✳

● श्री गौतम काला, राँची ● श्री बुधराज जैन कासलीवाल, पांडीचेरी

✳✳✳ पुण्यार्जक विशेषांक संरक्षक ✳✳✳

● प्रबंधकारिणी समिति, श्री १००८ पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर, कीर्तिनगर, जयपुर
● सकल दिगम्बर जैन समाज, दाँता रामगढ़, जिला सीकर ● श्री कुन्थीलाल, रमेशचंद, नरेश कुमार जैन गदिया, नसीराबाद (अजमेर) ● सकल दिगम्बर जैन समाज एवं वर्षायोग समिति 2011, रामगंजमण्डी
● श्री ताराचंद मित्तल परिवार एवं महेशकुमार अशोक कुमार महेन्द्र कुमार जैन ठोरा,

✳✳ पुण्यार्जक संरक्षक ✳✳

● श्री नीरज S/o श्रीमती चन्द्रकला पाटनी, रांची ● सुशील कुमार, अभिषेक कुमार, रोहित कुमार जैन, पांडीचेरी
● श्री मिट्ठनलाल जैन, नई दिल्ली

✳ सम्मानीय संरक्षक ✳

● श्री वर्धमान विक्रमादित्य जैन, चैन्नई ● श्री पदमराज होळल, दावणगेरे ● श्री सोहनलाल कासलीवाल, सेलम ● श्री संजय सोगानी, राँची ● श्री आकाश टोंग्या, भोपाल ● कु. इन्द्रसेना जैन, जयपुर ● श्रीमती संगीता हरीश बजाज, टीकमगढ़ ● श्रीमती कमलाबाई अशोक जैन साहबजाज, अजमेर ● श्री बी.एल. पचन्ना, बैंग्लुरू ● श्री घनश्याम जैन, कृष्णा नगर, दिल्ली ● श्री कमलजी काला, जयपुर ● श्री अरुणकाला 'मटरू', जयपुर ● श्री महावीरप्रसाद संजयकुमार जैन, इस्पात एंटरप्राईजेस प्रा.लि., कलकत्ता ● श्री नरेश जैन, सूरत (दिल्ली वाले)

✳ संरक्षक ✳

● श्री विजय अजमेरा, रीवा ● श्री के. सी. जैन, डि. एक्साइज अधिकारी, छतरपुर ● श्री एस.एल. जैन (बागड़िया), जयपुर ● श्री गुणसागर ठोलिया, किशनगढ़-रेनवाल, जयपुर ● श्री अजित प्रसाद जैन सराफ, रेवाड़ी ● श्री विजयपाल जैन, भोलानाथ नगर, शाहदरा (दिल्ली) ● श्री दिगम्बर जैन तीर्थ बड़ा मंदिर, हस्तिनापुर (मेरठ) ● श्री संजय जैन, गुड़गांव ● श्रीमती सुषमा रवीन्द्र कुमार, गाजियाबाद ● श्री श्रेयांस कुमार पाटोदी, जयपुर ● श्रीमती अनिता पारस सौगानी, जयपुर ● श्री जितेन्द्र अजमेरा, जयपुर
● श्री ओम कासलीवाल, जयपुर ● श्री मंगलचंद हरकचंद मोतीलाल कमलचंद छाबड़ा, जयपुर ● श्री राकेश जैन, रोहिणी, दिल्ली ● श्री कल्याणमल झांझरी, कलकत्ता ● श्रीमती सुधा महेन्द्र कुमार जैन, भोपाल
● श्री विजय कुमार जैन, छाबड़ा, जयपुर ● श्री कस्तूरचंद सुरेश कुमार जैन, रामगंज मण्डी, कोटा
● श्रीमती हीरामणी चांदमल सेठी, गुवाहाटी

✳ विशेष सदस्य ✳

● श्री भागचन्द जैन, नसीराबाद, अजमेर

भाव विज्ञान परिवार

✳ आजीवन सदस्य ✳

दमोह

श्री यू.सी. जैन, एलआईसी
श्री जिनेन्द्र जैन उस्ताद
श्री नरेन्द्र जैन सतलू
श्री संजय जैन, पथरिया
श्री अभय कुमार जैन गुड्डे, पथरिया
श्री निर्मल जैन इटोरिया
श्री राजेश जैन हिनोती
श्री राजेश गोकुलप्रसाद जैन

कोपरगाँव

श्री चंदूलाल दीपचंद काले
श्री पूनमचंद चंपालाल ठोले
श्री अशोक चंपालाल ठोले
श्री नितिन मदनलाल कासलीवाल
श्री चंपालाल दीपचंद ठोले
श्री अशोक केशरचंद पापड़ीवाल
श्री सुभाष भाऊलाल गंगवाल
श्री तेजपाल कस्तूरचंद गंगवाल
श्री सुनील गुलाबचंद कासलीवाल
श्री श्रीपाल खुशालचंद पहाड़े
श्री शिखरचंद अशोक कुमार लोहाड़े

छतरपुर

श्री प्रेमचंद कुपीवाले
श्री चतुर्भुज जैन, सब इंजीनियर
श्री रतनचंद देवेन्द्र कुमार बस वाले
श्री कमल कुमार जतारावाले
श्री भागचन्द जैन, ललपुरावाले
श्री देवेन्द्र ड्योढ़िया
अध्यक्ष, चेलना महिला मंडल, डेरा पहाड़ी
अध्यक्ष, मरुदेवी महिला मंडल शहर
पंडित श्री नेमीचंद जैन
डॉ. सुरेश बजाज
श्री प्रसन्न जैन ''बन्टू''

टीकमगढ़

श्री विनय कुमार जैन
श्री सिंघई कमलेश कुमार जैन
श्री संतोष कुमार जैन, बड़माड़ई
श्री अनुज कुमार जैन
श्री सी.बी. जैन, मजना वाले
श्री जिनेन्द्र कुमार जैन, रामगढ़
श्री राजीव बुखारिया
श्री सुनील जैन, मालपीठा वाले
श्री विमल कुमार जैन, मालपीठा
श्री सोनलकुमार संतोषकुमार जैन, खिरियावाले

सीधी

श्री सुनील कुमार जैन, सीधी

ग्वालियर

श्रीमती ओमा जैन
श्रीमती केशरदेवी जैन
श्रीमती शकुन्तला जैन
श्री दिनेश चंद जैन
श्रीमती सुषमा जैन
श्री ब्र. विनोद जैन (दीदी)
श्रीमती सुप्रभा जैन
श्रीमती प्रमिला जैन
श्रीमती मिथलेश जैन
स.सि. श्री अशोक कुमार जैन
श्रीमती मीना जैन
श्रीमती पन्नी जैन, मोहना
श्रीमती मीना चौधरी
श्री निर्मल कुमार चौधरी
श्री कल्याणमल जैन
श्रीमती सूरजदेवी जैन
श्रीमती उर्मिला जैन
श्रीमती विमला देवी जैन
श्रीमती विमला जैन
श्रीमती मोती जैन
श्रीमती अल्पना जैन
श्रीमती रोली जैन
श्रीमती ममता जैन
श्रीमती नीती चौधरी
श्रीमती आभा जैन
श्रीमती सुशीला जैन
श्रीमती पुष्पा जैन
श्रीमती अंगूरी जैन
श्री ओ.पी. सिंघई
श्रीमती मंजू एवं शशी चांदोरिया
श्री सुभाष जैन
श्री खेमचंद जैन
श्री बसंत जैन

असम/गुवाहाटी

वर्धमान इंग्लिश अकादमी, तिनसुखिया
श्री नाथूलाल जैन, नलबारी
श्रीमती इंदिरा छाबड़ा, कामरूप
श्रीमती रेखा विनोद जैन, कामरूप
श्रीमती अमरावदेवी जैन सरावगी, रायगंज
श्रीमती सीमा राजेश काला, धुबड़ी
सुश्री बबीता पहाड़िया, कामरूप

जबलपुर

श्रीमती सितारादेवी जैन
श्री जरत कुमार जैन, डिस्ट्रिक्ट जज

अशोक नगर

श्री प्रमोद कुमार पुनीत कुमार जैन

भिण्ड

श्री सुरेशचंद्र जैन
श्री महेशचंद जैन पहाड़िया
श्री विजय जैन, रेडीमेड वाले
श्री संजीव जैन 'बल्लू'
श्री महेन्द्र कुमार जैन
श्री महावीर प्रसाद जैन
श्रीमती मीरा ध.प. श्री सुमत चंद जैन

जयपुर

श्री राजेश जैन (गंगवाल)
श्री रिखब कुमार जैन
श्री बाबूलाल जैन
श्री कैलाशचंद जी मुकेश छाबड़ा
श्री पदम पाटनी
श्री राजीव काला
श्री सुनील कुमार राजेश कुमार जैन
श्री पवन कुमार जैन
श्री धन कुमार जैन
श्री सतीश जैन
श्री अनिल जैन (पोल्याका)
श्रीमती शीला ड्योड़िया
श्रीमती शांतिदेवी सोध्या
श्री हरकचंद लुहाड़िया
श्रीमती शांतिदेवी बख्शी
श्रीमती साधना गोदिका
श्री राजकुमार लुहाड़िया
श्री दिनेश कुमार जैन
श्री विमल चन्द जैन
श्री प्रेमचंद काला
श्री उम्मेदमल जैन
श्री उत्तमचंद जैन
श्री पदम कुमार जैन
श्री भविष्य गोधा
श्री बृजमोहन जैन
श्री प्रेमचंद जी बैनाड़ा
श्री महावीर जी सोगानी
श्री संजय सोगानी
श्री अरूण कुमार सेठी
श्री विनोद पांडया
श्री वीरेन्द्र कुमार पांडया
श्री नरेन्द्र कुमार जैन
श्री कौशल किशोर जैन
श्री सुशील कुमार जैन
श्री ओम प्रकाश जैन
श्री रिषभ कुमार जैन
श्री वीरेन्द्र कुमार जैन
श्रीमती सुशीला सोगानी
श्रीमती शीला जैन
श्रीमती बीना जैन
श्रीमती उन्नति पाटनी
श्रीमती सुनीता कासलीवाल
श्रीमती अनीता वैद्य
श्रीमती पदमा लुहाड़िया
श्रीमती सुनीता काला
श्री प्रमोद काला
श्रीमती निर्मला काला
श्रीमती मधुबाला जैन
श्रीमती हीरामणि जैन
सुश्री साक्षी सोनी
श्री महावीर कुमार कासलीवाल
श्री अनंत जैन
श्री रामजीलाल जैन
डॉ. पी.के. जैन
डॉ. डी. आर. जैन
श्री दिलीप जैन
श्री टीकमचंद बाकलीवाल
श्री हरीशचंद छाबड़ा
श्री विमल कुमार जैन गंगवाल
श्री पुष्पा सोगानी
श्री राजकुमार पाटनी
श्री श्रीपाल जैन
श्रीमती पूनम गिरिन्द्र तिलक
श्री पारस सोगानी
श्रीमती अरुणा अमोलक काला
श्री कपूरचंद जी लुहाड़िया
श्रीमती इंद्रा मनीष बज
श्री नरेन्द्र अजमेरा
श्री लाडूलाल जैन
श्रीमती रानीदेवी सुरेशचंद मौसा
श्रीमती आशा सुरेन्द्र कुमार कासलीवाल
श्रीमती आशा रानी सुरेश कुमार लोहाड़िया
श्रीमती बीना विमलकुमार पाटनी
श्रीमती राखी आशीष सोगानी
श्रीमती चंद्रलेखा महावीरप्रसाद शाह
श्रीमती प्रमिला रूपचंद गोदिका
श्रीमती प्रतिभा प्रसन्न कुमार जैन
श्रीमती शांति देवी पांड्या
श्री हेमन्त कुमार जैन शाह
श्री धर्मचंद जैन
श्री मुरालीलाल गुप्ता
श्री पारसचंद जैन कासलीवाल कुम्हेर
श्री निर्मल कुमार पाटनी
श्री मनीष कुमार गंगवाल
श्री नरेन्द्र कुमार जैन
श्री हरकचंद छाबड़ा
श्री कुन्थीलाल जैन
श्री गोपाललाल जैन बड़जात्या
श्री महेन्द्र कुमार जैन साह
श्री सुरेन्द्र पाटनी
श्री सी.एल. जैन
श्री प्रदीप पाटनी
श्री लल्लू लाल जैन
डॉ .विनीत साहुला
श्री उत्तम चंद जैन
श्री मनोज जैन
श्री ज्ञानचंद जैन
श्री सुरेश चंद जैन
डॉ. श्रीमती चिमन जैन
श्रीमती प्रेम सेठी

भाव विज्ञान परिवार

✴ आजीवन सदस्य ✴

श्रीमती नीता जैन
श्री सुरेशचन्द जैन
श्री राजेन्द्र जैन अग्रवाल
श्री हरीश कुमार जैन बाकलीवाल
श्री हंसराज जैन
श्रीमती अमिता प्रमोद जैन
श्री रीतेश बज
श्री अनिल कुमार बोहरा
श्री नवीनकुमार छाबड़ा
श्री कमलचंद जैन बाकलीवाल (अंधिका)
श्री महेन्द्र प्रकाश काला
श्री बाबूलाल सेठी
श्री प्रेमचंद छाबड़ा
श्री प्रदीप जैन बोहरा
डॉ. राजकुमार जैन
श्री अरुण शाह
श्री महेन्द्र कुमार जैन
श्री प्रकाशचंद जैन काला
श्री प्रकाशचंद जैन बड़जात्या
श्री कैलाश फूलचंद पांड्या
डॉ. विजय काला
श्री सम्पतलाल जैन
श्री जीवन्धर कुमार सेठी
श्री सुशील कुमार काला
श्री धर्मचंद रतनलाल जैन
श्रीमती ज्योत्सना पंकज जैन दोषी
श्री अमित अंधिका जैन

मदनगंज-किशनगढ़

श्री स्वरूप जैन बज (जैन)
श्री नवरतन दगड़ा
श्री सुरेश कुमार जैन (छाबड़ा)
श्री प्रकाशचंद गंगवाल
श्री ताराचंद जैन कासलीवाल
श्री पदमचंद सोनी
श्री भागचंद जी दोशी
श्री धर्मचंद जैन (पहाड़िया)
श्री प्रकाशचंद पहाड़िया
श्री भागचंद जी अजमेरा

किशनगढ़-रेनवाल

श्री केवलचंद ठोलिया
श्री निर्मलकुमार जैन
श्री महावीर प्रसाद गंगवाल
श्री नरेन्द्र कुमार जैन
श्री धर्मचंद छाबड़ा जैन
श्री भंवरलाल बिनाक्या
श्री धर्मचंद पाटनी
सुश्री निहारिका जैन विनायका
श्रीमती मधु बिलाला
श्री पवन कुमार जैन बाकलीवाल
श्री राहुल जैन
श्री राकेश कुमार रांवका

श्री बिरदीचंद जैन सोगानी
श्री धर्मचंद अमित कुमार ठोलिया
श्री भागचंद अजमेरा

दौसा

श्री मनीष जैन लुहाड़िया

जोबनेर

श्री महावीर प्रसाद
श्री भागचंद बड़जात्या जैन
श्री भागचंद गंगवाल
श्री जितेन्द्र कुमार जैन
श्री संजय कुमार काला
श्री रमेश कुमार जैन बड़जात्या
श्री दीपक कुमार जैन शास्त्री
श्री रमेश कुमार जैन शास्त्री
श्री निलेश कुमार जैन
श्री महेन्द्र कुमार पाटनी
श्री पदमचंद बड़जात्या जैन
श्री प्रेमचंद ठोलिया जैन
श्री शांतिकुमार बड़जात्या
श्री ताराचंद जैन (कामदार)
श्री मूलचंद जैन
श्रीमती सुनिता दिनेश कुमार बड़जात्या

इन्दौर

श्री आई.सी. जैन
श्री संदीप प्रेमचंद जैन

लखनऊ

स्व. डॉ. पी.सी. जैन

चैन्नई

श्री डी. भूपालन जैन
श्री सी. सेल्वीराज जैन
श्री ताराचंद जैन

नागौर

श्री प्रकाशचंद पहाड़िया, डेह

नसीराबाद

श्री महावीर प्रसाद चंद्रप्रकाश सेठी
श्री ताराचंद पाटनी
श्री शान्तिलाल पाटनी
श्री शान्तिलाल गोधा
श्री शान्तिलाल जैन सोगानी
श्री सुशील कुमार गदिया
एडवोकेट अशोक कुमार जैन
श्री टीकमचंद भागचंद जैन
श्री ताराचंद पारसचंद सेठी
श्री महावीर प्रसाद राजकुमार गदिया
श्री प्रकाश चंद जैन

अजमेर

श्री महावीर प्रसाद काला
श्रीमती सविता जैन, वीरगांव
श्रीमती स्नेहलता प्रेमचंद पाटनी
श्री रूपचंद छाबड़ा
श्री सुरेशचंद पाटनी

श्रीमती चंद्रा पदमचंद सेठी
श्री चंद्रप्रकाश बड़जात्या
श्री भागचंद निर्मल कुमार जैन
श्री निर्मलचंद जी सोनी
श्री नरेन्द्र कुमार प्रवीण कुमार जैन
श्रीमती सरोज डॉ. ताराचंद जैन
श्रीमती आशा तिलोकचंद बाकलीवाल
श्री नवरतनमल पाटनी
डॉ. रतनस्वरूप जैन
श्रीमती निर्मला प्रकाशचंद सोगानी
श्रीमती निर्मला सुशील कुमार जी पांड्या
श्रीमती शरणलता नरेन्द्रकुमार जैन
श्रीमती मंजु प्रकाशचंद जी जैन (काला)
श्री संदीप बोहरा
श्री राकेश कुमार जैन
श्री राजेन्द्र कुमार अजय कुमार दनगसिया
श्री पूनमचंद, देवेन्द्र, धीरेन्द्र कुमार सुथनिया
श्री नाथूलाल कपूरचंद जैन
श्रीमती चांदकंवर प्रदीप पाटनी
श्री विनोद कुमार जैन
श्री नरेश कुमार जैन
इंजीनियर श्री सुनील कुमार जैन
श्री जिनेन्द्र कुमार जैन
श्रीमती उषा ललित जैन
श्री रमेश कुमार जैन
श्रीमती आशा जैन
श्री ताराचंद दिनेश कुमार जैन
श्री मनोज कुमार मुन्नालाल जैन
श्री ज्ञानचंदजी गदिया
श्री निहालचंद मिलापचंद गोटेवाला
श्री विशाल जैन कैलाश बड़जात्या

पिसानगन

श्री पुखराज पहाड़िया
श्री सज्जन कुमार दोशी
श्री अशोक कुमार राकेश कुमार दोशी

कुचामनसिटी

श्री चिरंजीलाल पाटोदी
श्री सुरेश कुमार अमित कुमार पहाड़िया
श्री विनोद कुमार पहाड़िया
श्री लालचन्द पहाड़िया
श्री गोपालचंद प्रदीप कुमार पहाड़िया
श्री सुरेश कुमार पांड्या
श्री सुन्दरलाल रमेश कुमार पहाड़िया
श्री संजय कुमार महावीर प्रसाद पांड्या
श्री कैलाशचन्द प्रकाशचंद काला
श्री विनोद विकास कुमार झाँझरी
श्रीमती चूकीदेवी झाँझरी
श्री अशोक कुमार बज
श्री संतोष प्रवीण कुमार पहाड़िया
श्री वीरेन्द्र सौरभ कुमार पहाड़िया
श्री भंवरलाल मुकेश कुमार झाँझरी

श्री ओमप्रकाश शीलकुमार झाँझरी

भोपाल

डॉ. प्रो. पी.के. जैन, एमएएनआईटी
श्री एस.के. बजाज
श्री प्रसन्न कुमार सिंघई
श्री सुभाष चंद्र जैन
श्रीमती विमला रमेश चंद्र जैन
श्री सुनील जैन
श्री राजेन्द्र के जैन (चौधरी)
श्री आर.के. जैन, एक्साइज इंसपेक्टर
श्री तेजकुमार एस.एल. जैन
श्री विनय कुमार राजकुमार जैन
श्री सुशील जैन (सुशील आटो)
श्रीमती शांतिबाई जैन

मुम्बई

श्री एन.के. मित्तल, सी.ए.
श्री हर्ष कोछल्ल, बी.ई.
श्री दीपक जैन
श्री धीरेन्द्र जैन
श्रीमती शर्मिला ललितकुमार बज जैन
श्रीमती रंजना रमेशचंद शाह

संगमनेर, अहमदनगर

श्री जैन कैलासचंद दोघूसा, साकूर

सीकर

श्री महावीर प्रसाद पाटोदी
श्री महावीर प्रसाद जैन लालसवाले (देवीपुरा कोठी)
श्री ज्ञानचंद जैन, फतेहपुर शेखावटी

दाँता-रामगढ़

श्री विजय कुमार कासलीवाल, दाँता
श्री निशांत जैन, दाँता-रामगढ़
श्री राजकुमार काला, दाँता-रामगढ़
श्री विनोद कासलीवाल, दाँता
श्री सुनील बड़जात्या, दाँता-रामगढ़
श्री अमरचंद सेठी, दाँता-रामगढ़
श्री हरकचंद जैन झांझरी, दाँता
श्रीमती मायादेवी कैलाशचंद जैन

रानोली (सीकर)

श्री विनोद कुमार जैन
श्री राजकुमार छाबड़ा
श्री शान्तिलाल रांरा
श्री रतनलाल कासलीवाल
श्री सुभाषचंद छाबड़ा
श्री विकास कुमार काला
श्री ज्ञानचंद बड़जात्या
श्री गुलाबचंद छाबड़ा (डाकुड़ा)
श्री सुशील कुमार छाबड़ा

अलवर

श्री मुकेश चंद जैन
श्री सुंदरलाल जैन
श्री शिवचरनलाल अशोक कुमार जैन

भाव विज्ञान परिवार

✴ आजीवन सदस्य ✴

श्री सुरेशचंद संदीप जैन
श्री राकेश नथ्थूलाल जैन
श्री चंद्रसेन जैन
श्री अंकुर सुभाष जैन
श्री बंशीधर कैलाशचंद जैन
श्री अशोक जैन
श्री राजेन्द्र कुमार जैन
श्री धर्मचंद जैन
श्री महावीर प्रसाद जैन
श्री प्रवीन कुमार जैन
श्री महेन्द्र कुमार जैन
श्री दीपक चंद जैन
श्री राजीव कुमार जैन
श्री प्रेमचंद जैन
श्री अनंत कुमार जैन
श्री के.के. जैन
श्री सुशील कुमार जैन
श्री सुमेरचंद जैन
श्री अनिल कुमार जैन राखीवाला
एडवोकेट श्री खिल्लीमल जैन

सागर

श्री मनोज कुमार जैन
श्री प्रदीप जैन, इनकमटैक्स

तिजारा

श्री शिखरचंद जैन
श्री हुकुमचंद जैन
श्री आदीश्वर कुमार जैन
अध्यक्ष, श्री पार्श्वनाथ दि. जैन मंदिर
श्री अशोक कुमार जैन
श्री मनीष जैन

पांडीचेरी

श्री पारसमल कोठारी
श्री गणपतलाल नेमीचन्द कासलीवाल
श्री नेमीचन्द प्रसन्न कुमार कासलीवाल
श्री चम्पालाल निरंजन कुमार कासलीवाल
श्री नथमल गौतम चन्द सेठी
श्री मेघराज जयराज बाकलीवाल
श्री आसूलाल भागचंद कासलीवाल
श्री मदनलाल राजेन्द्र कुमार कासलीवाल
श्री सोहनलाल अरिहंत कुमार पहाड़िया

रेवाड़ी

श्री सुरेशचंद जैन
श्री अजित प्रसाद जैन पंसारी
श्री पदम कुमार जैन
श्री नानकचंद जैन
श्री राजकुमार जैन
श्री रविन्द्र कुमार जैन
श्री अजय कुमार जैन
श्री पोलियामल जैन
श्री दालचंद जैन

श्री ब्रह्मचारी वीरप्रभु जैन
श्री सुभाषचंद जैन
श्री वीरेन्द्र कुमार जैन बजाज
श्री देवेन्द्र कुमार जैन सराफ
श्री राहुल सुपुत्र अशोक कुमार जैन
श्री महेन्द्र कुमार जैन
श्रीमती चमनलता एवं कान्ता जैन
श्री देवेन्द्र कुमार बादनलाल जैन
श्री अरविंद जैन (प्रेसीडेंट)
श्री के. एस. जैन, धारूहेड़ा

दिल्ली

श्रीमती अनीता जैन
श्री विजेन्द्र कुमार जैन, शाहदरा
श्री एम.एल. जैन, शाहदरा
श्री अंकित कुमार जैन, शाहदरा
श्री लोकेश जैन, शाहदरा
श्रीमती राजरानी, ग्रीनपार्क
श्री इन्द्र कुमार जैन, ग्रीनपार्क
श्रीमती रेनू जैन, ग्रीनपार्क
श्रीमती पुष्पा जैन, ग्रीनपार्क
श्रीमती रुकमणी जैन, ग्रीनपार्क
श्रीमती हेमा जैन, ग्रीनपार्क

मेरठ

श्री हर्ष कुमार जैन
श्री देवेन्द्र कुमार जैन सराफ
श्री इंद्रप्रकाश जैन, मवाना

पटियाला

श्रीमती कमलारानी राजेन्द्र कुमार जैन

हस्तिनापुर

श्री विजेन्द्र कुमार जैन

राँची

श्री योगेन्द्र जैन

गाजियाबाद

श्री गौरव जे.डी. जैन
श्री विकास जैन
श्री राजकुमार जैन
श्री एन.सी. जैन
श्री निखिल जैन
श्रीमती सोनिया सुनील कुमार जैन
श्री अशोक कुमार कुंवरसेन जैन
श्री सुभाष जैन
श्री पवन कुमार जैन
श्री प्रवीन कुमार महेन्द्र कुमार जैन
श्रीमती शारदा जैन
श्री डी.के. जैन
श्री अनिल कुमार जैन
श्री जयकुमार नितिन कुमार जैन
श्री प्रवीण कुमार रोशनलाल जैन
श्री अशोक कुमार मालती प्रसाद जैन
श्री प्रदीप कुमार जैन
श्री महेन्द्र कुमार जैन

श्रीमती अनुपमा राहुल जैन
श्री सुरेश चंद जैन
श्री विवेक जैन

गुड़गांव

एडवोकेट श्री कुंवर सेन जैन
श्री देवेन्द्र जैन
श्री रमेश चंद संदीप कुमार जैन
श्री श्रेयांस जैन
श्री महावीर प्रसाद जैन
श्रीमती सुषमा जैन
श्री सतीश चंद मयंक जैन
श्री रोबिन सी.के. जैन
श्री चंद्रप्रकाश मित्तल
श्रीमती विजय जैन
श्री कैलाश चंद जैन
श्री संजय जैन

पूर्णिया (बिहार)

श्री चांदमल जैन

कलकत्ता

श्री हरीशचंद्र जैन
श्री मनी खजांची

बेंगलुरू

श्री प्रसन्न कुमार जैन छाबड़ा
श्री जयकुमार जैन
श्री रमेश कुमार जैन

ब्यावर

श्री दीपक कुमार जैन
श्री महेन्द्र कुमार छाबड़ा
श्री धर्मचन्द रांवका जैन
श्री देवेन्द्र कुमार फागीवाला
श्री सारस मल झांझरी
श्री सुशील कुमार जैन बड़जात्या
श्री अशोक कुमार सोगानी
श्री भैरूलाल काला
श्री धरमचन्द जैन
श्री प्रबोध कुमार बाकलीवाल
श्री सुरेश चन्द बड़जात्या
श्री कमल कुमार दगड़ा
श्री शांतीलाल गदिया
श्री सुशील कुमार जैन
श्री पदम चन्द गंगवाल
श्री मयंक जैन
श्री मुकेश कुमार जैन
श्री चिरन्जी लाल पहाड़िया
श्री मनोज कुमार जैन
श्रीमती पुष्पा सोनी
श्री अशोक कुमार काला
श्री विजय कुमार फागीवाला
श्री पारसमल अजमेरा
श्री स्वरूपचन्द रांवका
श्री डॉ. दीपचन्द सोगानी

श्रीपाल अजमेरा
श्री घनश्याम जैन शास्त्री

सुजानगढ़

श्री पारसमल पाण्ड्या

मेड़ता रोड/सिटी (नागौर)

श्री जे.डी. जैन
श्री राजेन्द्र जैन
श्री अमरचंद धर्मचंद पाटनी
श्री रामरतन पाटनी

रामगंज मण्डी, कोटा

श्री शांतिलाल जैन
सुश्री कोमल महावीर जैन
श्री पदम कुमार विमल कुमार जैन
श्री रमेशचंद जी विनायका
श्री अमोलकचंद बागड़िया
श्रीमती उषा बागड़िया जैन
श्री शिखरचंद टोंग्या
श्री प्रकाश विनायका
श्री पदम कुमार राजमल जैन
श्री केवलचंद लुहाड़िया
श्री अजीत कुमार सेठी
श्री महावीर कुमार शाह
श्री अमर कुमार जैन
श्री प्रेमचंद सबड़ा
श्री जयकुमार विनायका
श्री नेमीचंद ठौरा
श्री नाथूलाल जैन
श्री सुशील कुमार जैन
श्री निर्मल कुमार नीलेश कुमार जैन
श्री निर्मल कुमार लालचंद जैन
श्री सुमेरमल पहाड़िया
श्री रामगोपाल सैनी
श्री महेन्द्र कुमार जैन सबद्रा
श्री शिखरचंद्र बागड़िया
श्री चैतन्यप्रकाश जैन
श्री हनुमानसिंह गुर्जर (जैन), तहसीलदार
श्री देशराज जोशी
श्रीमती पदमा विनोदकुमार जैन विनायका
श्रीमती कल्पना विनोद कुमार मित्तल

कोटा

श्री अभिषेक रूपचंद जैन
श्री पीयूषकुमार डॉ. पदमचंद दुगेरिया
श्री कैलाशचंद मोतीलाल जैन
श्री प्रकाशचंद सोहनलाल जैन

सोनकच्छ, देवास

श्री पदमकुमार पियूष कुमार छाबड़ा

पारोला (जलगांव)

श्री जयंतीलाल हीरालाल जैन

भाव विज्ञान पत्रिका की सदस्यता हेतु आवेदन-पत्र

रंगीन फोटो

मैं .... मधु (शहद), मांस, मद्य (नशा) का त्यागी, धर्म का अनुसरण करने वाला पिता/पति श्री ....
जिला .... प्रदेश ....से
भाव विज्ञान पत्रिका हेतु शिरोमणी संरक्षक रुपये 51000/-☐ पुण्यार्जक विशेषांक संरक्षक सदस्य रूपये 24500/-☐ परम संरक्षक रुपये 21000/-☐ पुण्यार्जक संरक्षक सदस्य रुपये 18,000/- ☐ सम्मानीय संरक्षक सदस्य रुपये 11,000/- ☐ संरक्षक सदस्य रुपये 5,100/-☐ विशेष सदस्य रुपये 3,100/-☐ आजीवन सदस्य रुपये 1,100/-☐ राशि देकर आजीवन सदस्यता स्वीकार करता/ करती हूँ।

मेरा पत्र व्यवहार का पता :- ....
....
जिला .... प्रदेश ....
पिनकोड .... एस.टी.डी. कोड ....
फोन नम्बर .... मोबाईल ....
ई-मेल .... है।
क्या आप अपने मोबाईल पर महाराज श्री के विहार/कार्यक्रम के फ्री मैसेज प्राप्त करना चाहेंगे ?(हाँ/नहीं)

दिनांक : हस्ताक्षर

कार्यालयीन उपयोग हेतु

श्री/श्रीमति .... पिता श्री ....
को शिरोमणी संरक्षक/पुण्यार्जक विशेषांक संरक्षक/परम संरक्षक/पुण्यार्जक संरक्षक/सम्मानीय संरक्षक/संरक्षक/विशेष सदस्य/आजीवन सदस्यता क्रमांक ....प्रदान की जाती है।

दिनांक हस्ता. सम्पादक/प्रबन्ध सम्पादक

नोट : (1) ''भाव विज्ञान'' भोपाल के पक्ष में (ड्राफ्ट अथवा) स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, टी.टी. नगर, भोपाल में नेट/कोर बैंकिंग सुविधा के अंतर्गत एस.बी. एकाउंट नं. **63016576171** एवं **IFS Code SBIN0030005** में नगद राशि सीधे जमा कर प्रकाशक को रसीद की छायाप्रति प्रेषित कर सदस्यता शुल्क की रसीद प्राप्त की जा सकती है।

सदस्यता आवेदन पत्र भेजन का पता :

''भाव विज्ञान'', एम-8/4, गीतांजली काम्प्लैक्स, कोटरा सुल्तानाबाद, भोपाल- 462 003 (म.प्र.) को प्रेषित करें।

कृपया यहाँ से निकालें

भाव विज्ञान

(त्रैमासिक पत्रिका)

BHAV VIGYAN

आशीर्वाद एवं प्रेरणा

संत शिरोमणी आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के धर्मप्रभावक शिष्य
मुनि श्री आर्जवसागर जी महाराज

पत्रिका की विशेषताएं एवं उद्देश्य :

☛ विशिष्ट साधक आचार्यों या साधुओं के और डाक्ट्रेट व विशिष्ट विद्वानों के शिक्षाप्रद आलेखों, प्रवचनों एवं समीक्षाओं का प्रस्तुतिकरण ।

☛ सत् साहित्य समीक्षा।

☛ अहिंसात्मक जीवन शैली।

☛ व्यसन मुक्ति अभियान ।

☛ हिंसक पदार्थों व हिंसक सौंदर्य प्रसाधन का निरसन।

☛ नई पीढ़ी के लिए वैज्ञानिक शैली में जैन दर्शन का प्रस्तुतिकरण।

☛ रूढ़िवाद, मिथ्यात्व व शिथिलाचार रहित अनेकान्त, स्याद्वाद और सापेक्षवाद शैली में जैनत्व का प्रस्तुतिकरण।

☛ धार्मिक प्रश्नोत्तरी व काव्य संग्रह की प्रस्तुति।

☛ धार्मिक पर्व आयोजन व मुनि संघ समाचार प्रस्तुति इत्यादि।

नोट : **(1) ''भाव विज्ञान'' भोपाल के पक्ष में (ड्राफ्ट अथवा) स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, टी.टी. नगर, भोपाल में नेट/कोर बैंकिंग सुविधा के अंतर्गत सेविंग बैंक एकाउंट नंबर-63016576171 एवं IFS Code SBIN0030005 में नगद राशि सीधे जमा कर प्रकाशक को रसीद की छायाप्रति प्रेषित कर सदस्यता शुल्क की रसीद प्राप्त की जा सकती है।**

सदस्यता आवेदन पत्र भेजन का पता

''भाव विज्ञान'' एम-8/4, गीतांजली काम्पलैक्स, कोटरा सुल्तानाबाद, भोपाल-462003 (म.प्र.) को प्रषित करें।

सम्पर्क : डॉ. अजित कुमार जैन - 09425601161, डॉ. सुधीर जैन - 09425011357

मुनिश्री के सानिध्य में समवसरण महामण्डल विधान की झलकियाँ

समवशरण महामण्डल विधान पर समवशरण
की भव्य रचना स्थानीय समाज द्वारा 2011

समवसरण महामण्डल विधान के समापन
पर भव्य रथ यात्रा

मुनिश्री आर्जवसागरजी महाराज विशाल जन समूह
को सम्बोधित करते हुए

विधान समापन पर रथयात्रा में भगवान
के साथ जुलूस में मुनिश्री ससंघ

मंगल कलश लेकर चलती महिलाएं

पुण्यार्जक शिखरचंद टोंग्या
परिवार कलश के साथ मुनिश्री से आशीर्वाद लेते हुए

विधान के पुण्यार्जक पुष्पेन्द्र टोंग्या, शिखरचंद टोंग्या परिवार का सम्मान करते समाज के संरक्षक राजमल व केवलचंद लुहाड़िया

रजि. क्रं. **MPHIN/2007/27127**

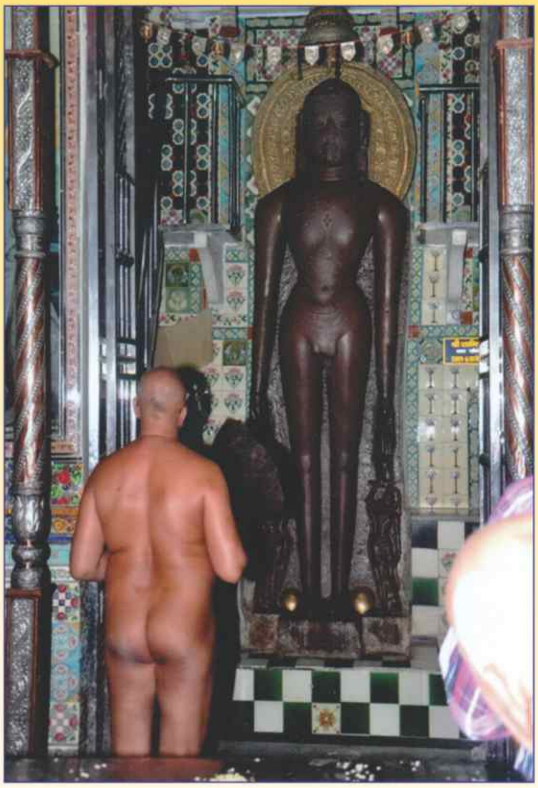

श्री शान्तिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर
रामगंजमंडी में
मुनिश्री आर्जवसागर जी महाराज
मूलनायक श्री 1008 भगवान शांतिनाथ
के दर्शन करते हुए।

श्री शा.दि. जैन नशियाँजी
रामगंजमंडी के
मूलनायक श्री शांतिनाथ भगवान

पुण्यार्जक

सकल दिगम्बर जैन समाज एवं मुनिश्री १०८ आर्जवसागर जी महाराज वर्षायोग समिति 2011

सौजन्य से

रामगंजमंडी, कोटा, राजस्थान

स्वामी एवं प्रकाशक : श्रीमती सुषमा जैन द्वारा मुद्रक : पवन कुमार जैन द्वारा पारस प्रिन्टर्स, 207/4, सांईबाबा काम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी. नगर, भोपाल से मुद्रित एवं एमआईजी-8/4, गीतांजली काम्पलैक्स, कोटरा सुल्तानाबाद, भोपाल (म.प्र.) से प्रकाशित।
सम्पादक - श्रीपाल जैन 'दिवा,' एल-75, केशर कुंज, हर्षवर्धन नगर, भोपाल-3 (म.प्र.)